

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

सितम्बर - II - 2023



अंक - 12

माउण्ट आबू

Rs.-12

25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति ने दादी की स्मृति में जारी किया 'डाक टिकट'

दादी ने ब्रह्माकुमारीज़ को दुनिया में सबसे बड़े महिला नेतृत्व वाले संगठन के रूप में किया स्थापित : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू



25 अगस्त 2023, नई दिल्ली।

राष्ट्रपति भवन में विशेष कार्यक्रम...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के स्मृति दिवस के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू ने 'डाक टिकट' का विमोचन किया। इस उपलक्ष्य में राष्ट्रपति भवन के कल्चरल सेंटर में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए माननीय राष्ट्रपति ने कहा कि दो दिन पहले ही हम भारत के वैज्ञानिकों की अभूतपूर्व सफलता के साक्षी बने। आज

भारत चांद के दुर्गम दक्षिणी ध्रुव पर कदम रखने वाला विश्व का पहला देश बन गया है। उन्होंने कहा कि चंद्रयान 3 के द्वारा अनेक महत्वपूर्ण जानकारीयां हासिल होंगी। जिनका लाभ समस्त विश्व को मिलेगा। ऐसे महानतम कार्यों की सफलता के पीछे अनेक वर्षों की तपस्या होती है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की गई तपस्या किसी महायज्ञ से कम नहीं है।

मानव मात्र में प्रेम का संचार ही दादी का जीवन : श्रीमति मुर्मू ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन तपस्या का प्रकाश स्तंभ रहा है। दादी जी ने 4 दशक तक ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की प्रमुख प्रशासिका के

रूप में अपनी अनमोल सेवाएं प्रदान की। 70 वर्षों के अथक त्याग, तपस्या और सेवा से उन्होंने विश्व भर में ईश्वरीय प्रेम का संदेश प्रसारित किया। दादीजी के प्रभावशाली नेतृत्व में संस्था एक छोटे से परिवार से विश्व स्तरीय आध्यात्मिक संगठन में परिवर्तित हो गई। दादी प्रकाशमणि जी का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि एक महान आत्मा ही प्रेम का संचार कर सकती है। कुछ लोग ऐसे कार्य कर जाते हैं जो लोगों के हृदय में सदा के लिए अमर हो जाते हैं।

मनुष्यों को उनकी आत्मिक शक्ति का अनुभव कराना सबसे महान कार्य: राष्ट्रपति

दादी प्रकाशमणि जी के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति ने जारी किया डाक टिकट

राष्ट्रपति भवन के कल्चरल सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में 250 आमंत्रित विशेष मेहमान हुए शामिल

दादी के 16वें पुण्य स्मृति में प्रकाश स्तम्भ पर किया श्रद्धासुमन अर्पित



शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए देशभर से हजारों लोग शांतिवन पहुंचे। अलसुबह से ही नयनों में प्रेम के मोती संजोये और सम्मान व स्नेह सम्पन्न यादों को हृदय में लिये भाई-बहनों का ताता दादी प्रकाशमणि जी की स्मृति में बने प्रकाश स्तंभ

पर लगा रहा। इस मौके पर संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, मल्टीमीडिया चीफ ब्र.कु. करुणा भाई सहित वरिष्ठ भाई-बहनों ने प्रकाश स्तंभ पर पुष्पांजलि अर्पित की। दादी का 16वां पुण्य स्मृति दिवस भारत सहित विश्व

के 137 देशों में विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया गया। संस्थान के आठ हजार सेवाकेन्द्रों पर दादी के जीवन चरित्रों को याद करते हुए कार्यक्रम का आयोजन हुआ। शांतिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित विश्व बंधुत्व कार्यक्रम में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि दादी सदा विश्व कल्याण के प्रति सोचती थीं। महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, ज्ञान सरोवर निदेशिका व संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. निर्मला दीदी ने भी अपने विचार रखे। धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने दादी जी के साथ के अनुभव साझा किए। इस मौके पर राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई, मीडिया विंग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, ब्र.कु. गीता दीदी, ब्र.कु. प्रकाश भाई सहित बड़ी संख्या में देशभर से आए लोग मौजूद रहे। मधुरवाणी ग्रुप ने दादी की स्मृति में सुंदर गीत प्रस्तुत किया।

ने कहा कि मनुष्यों को उनकी आत्मिक शक्ति का अनुभव करवाना और दुनिया में प्रेम एवं सौहार्द का विस्तार करना सबसे महान कार्य है। दादी प्रकाशमणि जी ने इस महान कार्य की ज्योति जगाई। अनुयायियों के द्वारा इस आध्यात्मिक ज्ञान और रूहानी प्रेम की ज्योति को सारे विश्व में फैलाते हुए दादीजी ने संस्था को दुनिया के सबसे बड़े महिला नेतृत्व वाले संगठन के रूप में स्थापित किया। **उनकी स्मृतियां और मानव कल्याण का संदेश सदा हमारे साथ रहेंगे:** माननीय राष्ट्रपति ने कहा कि कैसी भी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में दादी जी ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के साथ खड़ी रहकर उनका मार्ग दर्शन करती रहीं। आज दादी जी चाहे शारीरिक रूप से हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन उनके आध्यात्मिक एवं प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व की स्मृतियां और उनके मानव कल्याण का संदेश सदा हमारे साथ रहेगा। दादी जी की स्मृति में विमोचित किया गया डाक टिकट अनेक लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा। माननीय राष्ट्रपति ने भारत सरकार के डाक संचार विभाग का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके द्वारा चलाई जा

रही योजनाओं का लाभ बहुत लोगों तक पहुंच रहा है। **दादी जी के बताए मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि :** भारत सरकार के संचार राज्यमंत्री माननीय देवी सिंह चौहान ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ महिलाओं द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी आध्यात्मिक संस्था है। ब्रह्मा बाबा ने माताओं और बहनों को आगे करके एक महान फैसला लिया। दादी जी कभी भी अपने को हेड नहीं समझती थीं। वे कहती थीं कि हेड समझना अर्थात् हेडेक लेना। दादी जी के बताए हुए मार्ग पर चलना ही दादी जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। **वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को पूरे विश्व में प्रसारित किया:** ब्रह्माकुमारीज़ के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने दादी जी के साथ के अनुभव साझा करते हुए कहा कि दादी जी ने सादा जीवन उच्च विचार, आध्यात्मिक जीवन शैली, विश्व बंधुत्व व वसुधैव कुटुम्बकम् आदि भारतीय मूल्य, आदर्श व परंपराओं को पूरे विश्व में प्रसारित किया। ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने भी अपने विचार रखे।

कहीं समस्याओं का कारण हम स्वयं तो नहीं...!!!

आज मनुष्य अपने जीवन में ऐसे मोड़ पर जी रहा है जहाँ हर पल समस्याओं और विपरीत परिस्थितियों से उसका सामना होता है। हम जब स्वयं के ऊपर नज़र करें या इंद्रोस्फ़ोट करें तो ये समझ में आता कि कहीं हम ही तो इसके जन्मदाता नहीं! कहीं मेरी वजह से ही मुझे चोट तो नहीं पहुंच रही है!

सबसे सूक्ष्म किंतु हमारे सोच और रहन-सहन में ऐसा सूक्ष्म रूप लेकर घुलमिल गया है जो हमें पता ही नहीं चलता कि मैं समस्या से क्यों जूझ रहा हूँ। ऐसे में जब स्व पर नज़र डालते, गौर करते हैं तो पता चलता है कि दुःख, अशांति, समस्याएं और कुछ नहीं, 'मैं' और 'मेरापन' है। मैं-पन आया और हमारी शांति विचलित हुई। तो देखें, मैं-पन से क्या-क्या होता है? मैं-पन ऐसे तो नज़र में नहीं आता, उसका ऊपरी रूप लुभावना जैसा है, लेकिन उसको लेबोरेटरी में जैसे खून की चेकिंग करते हैं तो कैसर के सूक्ष्म किटाणु का पता चलता है, उसी तरह हम सूक्ष्मता से अपने आप का अवलोकन करते हैं तो पता चलता है कि मैं-पन का



डॉ. कृ. गंगाधर

भाव ही दुःख का कारण बनता है। मैं-पन आने से व्यवहार और सेवाओं में दिव्यता का गुलदस्ता मुरझाने लगता है। टकराव होने लगता है। हमारी जो दिव्यता है, दिव्यता की रौनक है वो खत्म होने लगती है। सूक्ष्मता के लेंस से देखने पर हमारे और परमात्म शक्ति के बीच में एक दीवार-सी खड़ी दिखाई देती है। इसीलिए परमात्मा हमारे द्वारा जो कार्य कराना चाहता है, वो नहीं हो सकता है। वो हमें यूज करना चाहते, पर हम उस योग्य नहीं होते।

हम सुनते रहते हैं कि करनकरावनहार परमात्मा है। हाथ बच्चों का, काम परमात्मा का। इसी रूप में हमने सुना है काम परमात्मा का और नाम बच्चों का। परमात्मा गुप्त रहता है, बच्चों से काम कराके उनका नाम करा देता है। और बच्चे सोचने लगते हैं, मैंने किया। बड़ी सूक्ष्म बात है ना! हम सबने अनुभव भी किया है, अच्छे-अच्छे अनुभव भी हुए हैं हम सबको।

कोई हमें पूछते हैं, हम बीमार हो जाते हैं, डॉक्टर की दवाई काम नहीं आती तो क्या करें? ऐसे में सूक्ष्म व श्रेष्ठ पुरुषार्थी उससे कह देता है कि इस तरह, इस विधि से करो और उसने किया और ठीक हो जाते हैं। वो कैसे हुआ? हमने बताया, उसने विश्वास रखा। बाबा (परमात्मा) की नज़र उसपर पड़ी और वो ठीक हो गया। हमने तो सिर्फ बताया। परमात्मा ने उसे ठीक कर दिया। हमने ठीक नहीं किया। ये सूक्ष्म बात हमें समझ में नहीं आती, पकड़ में नहीं आती। वास्तव में सच तो यही है, परमात्म शक्तियों से ही वो ठीक होता है।

कइयों के काम उलझे हुए हैं, हमने बताया, उनका काम ठीक हो गया। लोग सोचते हैं, इन्होंने ठीक कर दिया। लेकिन इन सबमें परमात्म शक्तियां ही कार्य कर रही होती हैं।

भक्ति मार्ग में एक बात प्रसिद्ध है, लोग किसी भी देवी-देवताओं में भावना रखते हैं, आराधना करते हैं, उन देवी-देवताओं के माध्यम से उनकी कामनाएं पूरी होती हैं। लेकिन वो भी तो परमात्मा के ही बच्चे हैं ना! जैसे कि भक्ति में भी नाम गणेश जी का और काम शिव पिता का। वैसे ही देखा जाये तो माँ-बाप ही बच्चों का काम करते हैं ना! इसी से सम्बंधित श्रीमद्भगवद् गीता में लिखा है, और परमात्मा ने भी बताया है, भक्त जिन-जिन देवताओं में भावना रखते हैं, मैं ही उनके द्वारा उन सभी की मनोकामनाएं पूरी करता हूँ। तो हम सभी इस सूक्ष्म बात को समझ लें कि ये सब कार्य परमात्मा के द्वारा हो रहे हैं।

अब अलौकिक कार्य को भी हम इसी दृष्टि से करें, ऐसी ही भावना रखें तो क्या-क्या होगा? सोचें ज़रा। ऐसी भावना रखने पर बाबा की मदद मिलती रहेगी। अक्सर हमारी भूल यही होती है कि ये मैंने किया। लेकिन वास्तव में बाबा ही करा रहा है। अगर मैं-पन आया, तो बाबा की मदद से हम वंचित रह जायेंगे। करनकरावनहार बाबा है, ये संकल्प अपने सबकॉन्शियस माइंड में उतार दो और निश्चय रखो कि काम बाबा का है, बाबा करा रहा है, मुझे खुद को यश-अपयश के प्रभाव से मुक्त रखना है। इस तरह से मेरा-पन भी हमारे अशांति का कारण बनता है। क्योंकि मेरा है, तो किसी ने उसको टच भी किया तो भी मुझे दर्द होगा। क्योंकि मेरा पन का भाव हमें महान बनने से रोकता है। मैं और मेरा-पन का भाव महान बनने नहीं देता। ये एक ऐसी बीमारी है जो हमें पकड़ में भी नहीं आती, न दिखाई देती। सूक्ष्म पुरुषार्थ की लेबोरेटरी में जब तक न लिया जाये तब तक ये हमें समझ में नहीं आता और हम ऐसे विकृत भाव को लेकर कार्य करते रहते, वहीं समस्याओं को जन्म देते हैं और हम दुःखी होते हैं। तो मैं और मेरापन को सूक्ष्मता से देखें और उसे त्याग दें और परमात्मा करा रहा है, इस संकल्प को बार-बार स्मृति में लाकर सबकॉन्शियस को शक्तिशाली बनायें।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जब मैं किसी के मुख से सुनती हूँ कहते हैं बाबा आप शक्ति देना... मैं कहती शक्ति भी क्यों मांगते! क्या मेरे मांगने से वह देगा! हम मांगने वाले भक्त नहीं हम तो अधिकारी बच्चे हैं। अधिकारी बच्चों के मुख से जब ऐसे बोल निकलते तो मैं यह बोल कानों से सुनना नहीं चाहती। अरे लुटाने वाला कहता तू लूट... जितना चाहे उतना लूट। जितना लूटेंगे-लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो

स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

रोज़ सवेरे एक ही धुन लगाओ - मुझे मेरा बाबा मिल गया। यह शिवबाबा की भांग पी लो, घोट-घोट कर नशा चढ़ा दो, बस इसी मस्ती में रहो तो बाकी दुनिया की सब मस्तिष्कां खत्म हो जाएं। मुझे तो कई बार हंसी भी आती तो तरस भी पड़ता - कहते हैं मैं सच कहती हूँ मुझे इतना निश्चय नहीं बैठता। मुझे वह भगवान, वह ईश्वर मिल गया है, यह

अन्दर से नहीं आता, मुझे तरस पड़ता है, कहती हूँ बाबा आप कितने न प्यारे हो, लेकिन गुप्त हो। बाबा इनके सामने तू बादल रख क्यों बैठे हो, तो बादलों के बीच आप सूर्य को यह नहीं जान सकते। बाबा को कहती - बाबा इनके सामने से यह बादल हटा दो तो यह देख लें, तू है कौन। तेरी इतनी शक्तियों की किरणें क्यों नहीं यह देखते! क्या इन्हें यह दिव्य बुद्धि नहीं मिली है? वास्तव में यह है सूक्ष्म में अपने देह-अभिमान का नशा, इसलिए सूर्य की शक्ति को पहचान नहीं सकते। कई बार मन में जो यह संकल्प

चलता कि जीवन का सौदा है, मालूम नहीं जीवन चल पायेगी या नहीं, मालूम नहीं मेरा भविष्य उज्ज्वल रहेगा। सोच समझकर कदम लेना चाहिए। पता नहीं जीवन का कैसा मोड़ आये... वह शादी तो क्या करनी, शादी तो बर्बादी है, बाबा का बनकर रहें तो ठीक है। परन्तु पता नहीं मेरे संस्कार किस तरह के हों, दूसरे

जितना लूटेंगे-लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

के किस तरह के हों, सर्विस में कदम रखें सफलता न मिले तो... ऐसा न हो इस दुनिया से भी जावें उस दुनिया से भी जावें! दादियाँ तो कहेंगी तुम्हें ब्रह्माकुमारी बनना है। वह तो ठीक है। ब्रह्माकुमारी तो ठीक परन्तु अपने पांव पर तो खड़ा होना चाहिए, कोई का बोझ नहीं बनना चाहिए, मैं सेन्टर पर रहूँ,

कभी कुछ चाहिए फिर मांगू... यह तो मेरे से नहीं होगा। किसी के दान से मैं खुद की जीवन कैसे पालूँगी। दूसरे के दान से मैं रोटी खाऊँ यह तो मेरे से नहीं हो सकता। मैं कमाऊँगी तो धन तो लग जायेगा... पता नहीं सेन्टर पर रहूँ, फिर आपस में बने, बैठकर मन खराब करूँ, इससे तो दूरबाज खुशबाज रहना ही ठीक है, कम से कम परतन्त्र तो नहीं रहूँगी, स्वतंत्र रहना ठीक है। बाबा को ही तो याद करना है। बाबा की मुरली ही तो सुननी है, बाकी यह सर्विस में रहना, झंझटों में आना, इससे तो अपने को न्यारा रखना ही ठीक है। बाबा कहते न्यारे रहेंगे तो प्यारे बनेंगे, इससे ही आप ही प्यारी बन जाऊँगी। अपनी शान में रहना चाहिए। आज की दुनिया में तो पैसे के सिवाए कुछ भी नहीं है, लोग भी पैसे की इज्जत करते, मैं ब्रह्माकुमारी तो बनी लेकिन पैसा होगा तो इज्जत तो मिलेगी। इसलिए कमना ठीक है। बहुत हैं जो ऐसी भाषा बोलती हैं। मैं भी कहती हूँ - बिल्कुल ठीक है, सही बात है... लेकिन प्रवृत्ति वालों के लिए तो बाबा ने कहा है तुम दोनों को निभाओ। कुमारियों को किस मुरली में कहा, वह मुरली तो मैंने कभी सुनी नहीं है।

वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जिसके दिल में, मन में रावण की प्रॉपर्टी है उसके दिल में बाबा कम्बाइण्ड कैसे रह सकता है? हम कभी-कभी यह समझते भी हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन वो सब समझते हुए भी जो नहीं होना चाहिए, नहीं करना चाहिए वो हो ही जाता है, उसका कारण क्या है? इसका सूक्ष्म कारण यही है कि कम्बाइण्ड रूप से बाबा जो हमको मदद देवे, वो मन में मदद के लिए है ही नहीं। तो बाबा की मदद न मिलने के कारण हम जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। जिस समय कोई गलती होती है तो आत्मा कमजोर हो ही जाती है, ऐसे टाइम पर बाबा के कम्बाइण्ड स्वरूप की मदद फायदा देती है। जब हमारे पास कम्बाइण्ड की फीलिंग ही नहीं है तो मदद कैसे मिलेगी। क्योंकि भावना ही वो हो जाती है, समझो वो अच्छा भी करेगा, तो भी मेरे मन में यह भावना है - यह है ही ऐसे, तो हमको उसकी अच्छाई में भी बुराई की ही फीलिंग आयेगी, कुछ भी अच्छा ही नहीं लगेगा।

दादी सबको प्यारी क्यों लगती थी? दादी अगर कोई भी बात देखती थी, दादी के पास किसी की भी रिपोर्ट आ जाए लेकिन दादी मन में कभी भी नहीं रखती थी। तो ऐसे अपने को चेक करो कि हमारी हर आत्मा के प्रति ऐसी शुभ भावना है? उनके निगेटिव कर्म का, वाणी का प्रभाव हमारे मन में तो नहीं है? तो जैसे बाबा की हैण्डलिंग भी ऐसे ही रही प्यार देने की, भले निगेटिव को जानता था लेकिन वो सब जानते हुए भी बाबा की फीलिंग शुभ भावना, शुभ कामना की रहती थी। ऐसे ही हम अपने को चेक करें। वृत्ति से वायुब्रेशन होते हैं। किसी के प्रति बहुत

अच्छी वृत्ति है, यह बहुत अच्छे पुरुषार्थी हैं, बहुत एक्स्पर्ट हैं तो हमारे वायुब्रेशन उसके प्रति क्या होंगे? तो हमको कौन-सी सेवा अभी करनी चाहिए? हमको भी दादी से प्यार है तो उसका रिटर्न हम क्या देंगे? हम वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें।

अभी योग को बहुत शक्तिशाली, ज्वालामुखी बनाना है। जिसमें मन की एकदम एकाग्रता भी हो और दूसरा हर आत्मा के प्रति रहमदिल की भावना इमर्ज हो। तो ऐसे अभी हम लोग अगर ज्वालामुखी योग में बैठे हैं, तो क्या हर आत्मा के प्रति मैं सुख दे रही हूँ, शान्ति की फीलिंग दे रही हूँ, यह संकल्प चलेंगे या सिर्फ हम अपने योग के पॉवरफुल स्टेज में होंगे? सूर्य जब उदय होता है और किरणें देता है तो उन किरणों द्वारा कहाँ पानी को सुखाने की सेवा होती है और कहाँ पानी बरसाने की सेवा करता है, दोनों ही करता है तो क्या सूर्य मन में संकल्प करता है कि मुझे यहाँ सुखाना है, यहाँ बरसाना है? नहीं। ऑटोमेटिकली सूर्य जब उदय होता है और उनकी किरणें फैलती हैं तो जहाँ जो आवश्यकता है, समझो सुखाने के शक्ति की आवश्यकता है, बरसाने की शक्ति की आवश्यकता है, तो जब सूर्य की किरणें निकलती हैं उनसे स्वतः ही वो प्राप्ति होती है। तो हमको भी यह संकल्प करने की जरूरत नहीं है, लेकिन हम मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर एकाग्र बुद्धि से स्थित रहें क्योंकि हम अगर एकाग्र नहीं होंगे तो हमारी निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है। हम कोई भी सही निर्णय तब कर सकेंगे जब हमारा मन-बुद्धि एकदम एकाग्र हो।

ज़रा भी न्यारेपन की कमी है, देह के भान में हैं तो बाबा का प्यार खींच नहीं सकते...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा से हम दृष्टि लेते हैं पर देखें हमारा चरित्र कैसा है? शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के रथ को लिया सोच समझके, जब बाबा को देखते हैं साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों की पहचान है। हर एक बाबा को देख रहा है, बाबा अव्यक्त रूप से गुल्ज़ार दादी के तन में कैसे हमारे सामने अपनी नज़र से निहाल करने आते हैं। बाबा अपनी नज़र से निहाल करने आते हैं। बाबा अपनी नज़र से हमको क्या से क्या भासना देता है। वो मेरा बाबा है, बाबा कहता है तुम मेरे बच्चे हो। टीचर के रूप में कितनी अच्छी पढ़ाई पढ़ा रहा है। पढ़ाई पर जब मनन-चिंतन-मंथन करते हैं तो ज्ञान के एक-एक बोल रत्न के बराबर हो जाते हैं। रत्नों की बहुत वैल्यू होती है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा। आत्मा की गहराई में जाओ, आत्मा शरीर में होते हुए मैं-पन व देह के भान का अभिमान नहीं है। कैसे बाबा ने देह में होते हुए देहभान से छुड़ा दिया है। अभी बाबा इशारा दे रहा है देह के भान से परे रहो। जब इतने सब लोग शान्ति में शान्त बैठे हैं, सबका अटेन्शन है कि मैं कौन, मेरा कौन... अन्दर से श्वासों-श्वास यह स्मृति रहे मैं कौन? मेरा कौन? बाबा ने आत्मा की समझ दी है फिर यह ड्रामा है, इसमें हर आत्मा का अपना पार्ट है। दो का एक जैसा पार्ट नहीं हो सकता है। यह इतनी अच्छी विधि जो है हरेक का पार्ट अपना है। यह स्मृति, रिगार्ड रखने का अच्छा रिकॉर्ड बना देती है। ड्रामा में हर आत्मा कहाँ से भी आती है चाहे देश, चाहे विदेश से, सब बाबा के बच्चे हैं। जब भी देखते हैं देह भान से परे हैं, सम्बन्ध से न्यारे हैं। न्यारे बनने से बाबा का प्यार खींच लेते हैं। ज़रा भी न्यारेपन की कमी है, देह के भान में हैं तो बाबा का प्यार नहीं खींच सकते हैं। बाबा तो हर आत्मा को घर जाने के लिए रोज़ इशारा दे रहा है कि बच्चे घर चलना है।

परमधाम की सब आत्मायें जब नीचे आयेंगी तब यहाँ से जाना शुरू हो जायेगा। हम तो बाबा के साथ पहले जायेंगे इस बात की खुशी है। यहाँ बाबा ने कई आत्माओं से सेवा कराई है, करा रहा है। भगवान है मेरा बाप, सेवा है मेरा भाग्य। यहाँ भगवान है, यहाँ सेवा है। ऐसी श्रीमत बाबा ने हम बच्चों को दी है। जो अपने को मनमत, परमत से फ्री कर दिया है, इस बात की मुझे बड़ी खुशी है। ऐसे जो फ्री हैं वो सच-सच हाथ उठाओ क्योंकि श्रीमत में बहुत पॉवर है, स्वयं भगवान की श्रीमत है। इतना समझाके इशारा देता है, डिटेल में भी समझाता है, इससे ही इतनी सारी सेवायें वृद्धि को पाई हैं।

जब अधर्म का नाश होने वाला है तो हमारे में कोई भी विकर्म रहा हुआ हो तो उसको विनाश के पहले नाश कर दो शंकर के रूप से यानी अशरीरी अवस्था से, लक्ष्य के अनुसार विष्णु समान बनने का पुरुषार्थ करना है। मुझे कमल फूल समान रहना है। अन्दर ही अन्दर यह अभ्यास चलता रहे। बाबा ने मुझे अच्छा कमल का फूल बनाया है, ऐसी किसी को फीलिंग है। दो-तीन दिन से बाबा ने गुणवान बनने पर ध्यान खिंचवाया है। निर्विकारी बनना है, कोई विकार की ज़रा भी अंशमात्र न हो इसके मिसाल बनो। बाबा ने शुरू में दिल्ली, बॉम्बे में ऐसे मिसाल तैयार किये थे क्योंकि बाबा के बोल में शक्ति इतनी है, काम महान शत्रु है। बस, समझा। ज़रा भी अंश मात्र काम की हो तो वो ब्राह्मण नहीं कहला सकता। जिसके अन्दर से काम विकार गया तो उसका क्रोध भी गया। ज़रा भी काम का अंश होगा तो क्रोध भी होगा। चलो काम, क्रोध तो गया, पर लोभ, मोह थोड़ा भी है तो वो बाबा का बच्चा नहीं है। लोभ के साथ बाबा ने इतना अथाह ज्ञान धन जो दिया है, मनी भी दी है तो मान भी दिया है।



अड्यार-चेन्नई। राज भवन में राष्ट्रपति श्रीमति दौपदी मुर्मू से मुलाकात कर ब्रह्माकुमारीज द्वारा तमिल नाडु में हो रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. बीना बहन, ब्र.कु. मुथुमणि बहन, ब्र.कु. देवी बहन, ब्र.कु. मदन भाई एवं डॉ. आर. वेलराज,वाइस चांसलर,अन्ना यूनिवर्सिटी।



रायपुर-छ.ग। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचन्दन जी को उनके जन्मदिन पर गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. लीना दीदी,माउण्ट आबू, ब्र.कु. नथमल भाई व ब्र.कु. महेश भाई।



वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में विश्व हिन्दू परिषद् के क्षेत्रीय प्रमुख कीर्ति भाई मेहता, दीपक भाई राजपुरोहित, अजय भाई व्यास, विष्णु भाई, उदय भाई, विपुल भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, एम.एस. यूनिवर्सिटी सेनेट मेम्बर सुनील कहार, डॉ. नरेश भाई तथा अन्य।



बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डॉ. रामश्लोक भाई,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सरोजा बहन, ब्र.कु. सोनी बहन, ब्र.कु. कमल बहन, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर टीवी5 कन्नड़ न्यूज़ चैनल के सदस्यों को आमंत्रित किया गया था जिनके माध्यम से ब्र.कु. कमल बहन ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं और आध्यात्मिकता के माध्यम से देशभक्ति और सच्ची स्वतंत्रता के बारे में बात की। साथ ही इस अवसर पर शांति यात्रा का आयोजन भी किया गया जिसमें लगभग 100 ब्र.कु. भाई-बहनों ने भाग लिया।



सेंधवा-म.प्र.। बड़वानी जिला के कलेक्टर डॉ. राहुल फटिंग को ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया बहन, शिक्षा प्रभाग के जौनल कोऑर्डिनेटर प्रवीण भाई तथा अन्य।



छतरपुर-सिविल लाइन(म.प्र.)। केन्द्रीय विद्यालय,छतरपुर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अतिथि के रूप में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। इस दौरान ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. भानु बहन, ब्र.कु. सुमन बहन, केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य सलीम सिद्दिकी, वरिष्ठ शिक्षक एस.के. नामदेव, रोमेश खरे, सीमा शर्मा, मुकुल नंदा तथा समस्त स्टाफ व विद्यार्थीगण मौजूद रहे।



दुर्ग-छ.ग। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के आनंद सोरोवर बघेरा सेवाकेन्द्र द्वारा महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुर्ग में आयोजित व्यसन मुक्ति कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. खुशबू बहन, मुख्य वक्ता ब्र.कु. कामिनी बहन, प्राचार्य दिनेश अग्रवाल, ब्र.कु. दाऊ भाई तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं व शिक्षकगण उपस्थित रहे।

सच की दुनिया के लायक बन... बाबा के अरमान को पूरा करना है

ज्योतिषी को अपने भविष्य के बारे में जानने के लिए हम हाथ दिखाते हैं। परन्तु यहाँ हमें न सिर्फ भाग्य की रेखा बनाने वाले बल्कि भाग्य को बढ़ाने वाले भी बनाते हैं। और ये अधिकार स्वयं परमात्मा हमें देते हैं। जैसे हमने किसी को ज्ञान समझाया और वो इस मार्ग में आगे चल पड़ा तो उसी का भाग्य जग जाता है ना!

मुझे याद है दिल्ली की एक घटना। एक मालिक के घर में एक किरायेदार बैठ गया, वह घर छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। मालिक कोर्ट में गया, 45 साल लग गये उसका निर्णय मिलने में। किरायेदार बड़ा चालाक आदमी था। वह अच्छे से अच्छा वकील लेकर उस केस को 45 साल तक चलाता रहा। आखिर मकान वाले को सुप्रीम कोर्ट तक जाना पड़ा। वह मालिक भी मर गया, उसका बेटा भी मर गया, उसके पोतों को वो वह मकान मिला। 45 सालों तक कोर्ट में लड़ने के बाद क्या मिला? अपने घर से एक किरायेदार को निकाला। अपने घर को ही छोड़ने के लिए 45 सालों तक न्याय के लिए लड़ना पड़ा। देखिये लाँ कैसे है! खोदा पहाड़, निकला चूहा। वह भी मरा हुआ चूहा! 45 सालों बाद उस मकान की हालत क्या हुई होगी! ऐसे हैं कलियुगी कानून। बाबा ने कहा है कि आप हैं लाँ मेकर्स। आपका भविष्य क्या है! लोग ज्योतिषी को दिखाते हैं अपना हाथ, भविष्य को जानने के लिए। लेकिन परमात्मा हैं हमारे भाग्य की रेखा को बढ़ाने वाले। न सिर्फ भाग्य की रेखा बनाने वाले और बढ़ाने वाले लेकिन वह कहते हैं कि यह अधिकार मैं आपको भी देता हूँ। जो भाई-बहनें दूसरों को ज्ञान देते हैं, योग सिखाते हैं, पवित्र बनाते हैं, उन्होंने भी तो उनके भाग्य की रेखा बनायी ना! दुनिया में कोई है जो



राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

5000 वर्षों के लिए किसी के भाग्य को उज्ज्वल, महान, सर्वश्रेष्ठ बना दे और 2500 वर्षों तक किसी भी प्रकार का दुःख, अशान्ति, कष्ट, क्लेश तन का, मन का, धन का किसी भी प्रकार का न हो?

कई बार तो लोग आपस में चर्चा करते हैं, एक-दूसरे की कटु आलोचना करते रहते हैं कि यह चोरबाजारी करता है, ब्लैकमार्केटिंग चलाता है, यह भ्रष्ट आदमी है। जब उनमें से

कोई मर जाता है तो कहते हैं या अखबारों में वही लोग बयान देते हैं कि वह बहुत अच्छा व्यक्ति था, इसकी मृत्यु से देश के लिए काफी हानि हुई, अभी इसकी जगह भरनी मुश्किल है। वही लोग कल तक उसको कहते थे कि वह गद्दार आदमी है, देश के लिए खतरनाक आदमी है इत्यादि-इत्यादि। जब वह जिन्दा था, उसके खिलाफ प्रदर्शन करते थे, उसको बुरा-भला कहते थे लेकिन मर गया तो उसको श्रद्धांजलि देते समय उसका गुणगान करते हैं, जैसे कोई महान देशभक्त, देशप्रेमी मर गया। क्योंकि जुबान को तो कोई हड्डी नहीं है, जहाँ चाहे वहाँ मोड़ लो। कल ऐसा बोलता था, आज बोल रहा है, बहुत अच्छा इन्सान था, बहुत शरीफ था। सत्य तो है नहीं।

इसलिए बाबा कहते हैं कि कलियुग में झूठ तो झूठ, सच की रती भी नहीं। रती क्या होती है, जानते हैं? पहले तोला, माशा, रती, मन, छँटाक होते थे तोलने के लिए। आठ चावल की एक रती होती थी। आठ चावल का जितना वजन होता है उसको एक रती कहते थे। बाबा कहते हैं, इतना भी सत्य इस दुनिया में नहीं है। ऐसा है कलियुग। सतयुग ऐसा है कि सच ही सच, झूठ की रती भी नहीं है। ऐसी झूठ की दुनिया में रहकर हम सबको सच की दुनिया के लायक बनना है, बाबा के अरमान पूरे करने वाले बनना है।



मुम्बई-घाटकोपरा। ब्रह्माकुमारीज के योग भवन सेवाकेन्द्र द्वारा रेंडिसन ब्लू कन्वेंशन सेंटर,कर्जत में भारत पेट्रोलियम के वरिष्ठ नेतृत्व टीम(एविग्रेशन) के लिए 'वेलनेस सेशन' का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्र.कु. राजीव पिशारोटी,राजयोग अभ्यासी एवं प्रबंधन सलाहकार, ब्र.कु. डॉ. कीर्तिमाला,राजयोग शिक्षिका और होम्योपैथी डॉक्टर, ब्र.कु. जन्मेजय जोशी,राजयोग अभ्यासी एवं वरिष्ठ एच.आर. प्रोफेशनल, भारत पेट्रोलियम के कार्यकारी निदेशक कानी अमुदन एन. तथा कर्मचारीगण मौजूद रहे।



जबलपुर-नेपियर टाउन भवराताल(म.प्र.)। जायंट्स ग्रुप ऑफ जबलपुर के 46वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पी.के. अग्रवाल, संतोष पटेल,पूर्व अध्यक्ष, राजयोगिनी ब्र.कु.भावना बहन, सी.के. अरोड़ा,वर्तमान अध्यक्ष, आर.एस. छाबड़ा,पूर्व अध्यक्ष, खूबचंद मगलानी एवं सरद नेमा।



गांधीनगर-गुज.। सेक्टर 6 स्थित जन सेवा में कार्यरत आँखों के सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल तेज आई सेंटर के ऑप्टोमोलॉजिस्ट डॉ. तेजल दलाल द्वारा आविष्कार किये गये एक हाईटेक आई निदान मोबाइल बस के उद्घाटन अवसर पर स्वास्थ्य राज्यमंत्री ऋषिकेश भाई पटेल, मेयर हितेश भाई मकवाणा एवं डॉ. तेजल दलाल का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत व अभिनंदन करते हुए ब्रह्माकुमारीज के गांधीनगर से 28 स्थित सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. केलाश दीदी, माउण्ट आबू से राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ भाई एवं ओमशान्ति मीडिया से ब्र.कु. गोविंद भाई। साथ ही सभी गणमान्य व्यक्तियों को माउण्ट आबू में आयोजित होने वाले कॉन्फ्रेंस में आने का निमंत्रण भी दिया। इस अवसर पर डिप्टी मेयर प्रेमल सिंह गोल, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन जशवंत भाई पटेल, जैन मुनी सहित अन्य प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे।



येवला-नासिक(महा.)। स्थानीय स्वाशासन विधान परिषद विधायक नरेंद्रभाऊ दगडे को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् गुलदस्ता भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीता बहन।



रीवा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा योग जन जागरूकता सप्ताह के समापन पर मार्तंड स्कूल के मैदान में आयोजित कार्यक्रम में सांसद जनार्दन मिश्रा, पूर्व मंत्री वर्तमान विधायक राजेंद्र शुक्ल, जिला शिक्षा अधिकारी, सभी थानों के टीआई, स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारी तथा सभी स्कूल, कॉलेज के प्राचार्य एवं स्टाफ सहित ब्र.कु. प्रकाश भाई व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।



अलीराजपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा वार्ड 20 कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत शा.उ.मा. विद्यालय सौंडवा में छात्र-छात्राओं को 'युवा सशक्तिकरण व नशा मुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रतिभा बहन।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 'सशक्त युवा सशक्त भारत' विषय पर आयोजित परिचर्चा के दौरान मंचासीन हैं भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान की जबलपुर शाखा के चेयरमैन सी.ए. कमल वलेचा, मध्य प्रदेश विद्युत मंडल अभियंता संघ के अध्यक्ष हितेश तिवारी, सिविल और वित्तीय मामलों की विशेषज्ञा एडवोकेट शालिनी चौधरी, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. वनीता बहन तथा अन्य।



तखतपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के सुख शांति भवन में सावन उत्सव के कार्यक्रम में ब्र.कु. ममता बहन, आशा सचदेव, पूजा सचदेव, मानसी तोलानी, विमला जांगड़े, डॉ. संध्या कश्यप, कुमुदनी धीवर, ईश्वरी कश्यप, नम्रता तोलानी, शांति साहू, लक्ष्मी सिंगरौल व अन्य महिलाओं सहित ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।



ज्ञानसरोवर-मा.आबू। ब्रह्माकुमारीज के महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, अध्यक्ष, महिला प्रभाग, राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, अति. महासचिव, ब्रह्माकुमारीज, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी, राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग, राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, अध्यक्ष, कला एवं संस्कृति प्रभाग, प्रो. आनंद पालीवाल, सदस्य, भारतीय विधि आयोग, संगीता बेनीवाल, अध्यक्ष, राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग, राज. एवं रेनू भाटिया, चेयरपर्सन, हरियाणा महिला आयोग।

ज़रा सोचें...

अब हम आत्माओं से, धर्मात्माओं से, देवात्माओं से, मनुष्यात्माओं से बुद्धि लगा के नहीं बैठे। अब हम अपना योग परमात्मा से लगाकर बैठे हैं। तो अपनी इस ऊँचाई को, वास्तविकता को, सत्यता को रियलाइज करना है, और उस रियलाइजेशन में हम रहते हैं तो हम अपनी ऊँची अवस्था रख सकते हैं।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

लौकिक में जब आप महसूस करते हैं कि हम फलाने कुल के हैं, इस जाति के हैं, इस खानदान के हैं, हमारा तो बहुत बड़ा मान-मर्तबा है। ये महसूसता होती है तो उस रॉयल्टी से व्यक्ति चलता है ना, कि भाई हमारे घर में ऐसा नहीं हो सकता है, हमारे खानदान में ऐसा नहीं चलता है, हमारे समाज में तो ऐसे नियम हैं। वो लौकिक महसूसता है। ये अलौकिक महसूसता है कि हम कौन हैं, किसके बच्चे हैं और किस कार्य के लिए

तो बिल्कुल बुद्ध हैं, कुछ आता नहीं है। तो वो टाइल एकदम लग जाते हैं कि— 'मेरे को बुद्ध कहा!' क्या समझते हैं? मेरे को मूर्ख कहा! मनुष्य का दिया हुआ टाइल लग जाता है और बाबा कितने टाइल देते हैं? वो नहीं लगता है! वहाँ कहेंगे मुझे बुरा लग गया, क्योंकि हमने अपना लेवल अभी भी वही साधारण, लौकिक रखा है। हम आपस में ऊँचे नहीं उठे। आपस में कॉमन ही बने रहते हैं तो एक-दो की बातें लग जाती हैं। पर आप ज्ञान स्वरूप बन जाओ, सेन्सीबुल बन जाओ, समझदार बन जाओ, आप

कोई आपसे मिलने आते हैं, आप आत्मअभिमानी हैं, तो आपको तुरंत उनकी बातों का प्रभाव नहीं पड़ेगा। कोई दुःख की बात करते हैं, कोई एक्सीडेंट की बात करते हैं, कोई किस प्रॉब्लम की। आज हरेक के मन में क्या है, बताइये? यही बातें हैं ना! अगर आप भी कॉमन लेवल पर हैं तो आपको भी ये होगा क्या हुआ, किसका एक्सीडेंट हुआ, फलाना हुआ? अगर आप आत्मअभिमानी हैं, बाबा की याद में हैं, अपने-आपको देहभान से न्यारा रखने की प्रैक्टिस करते हैं, तो बात का प्रभाव नहीं आयेगा। हाँ,

सदा खुश रहने का तरीका- अवस्था को अचल-अडोल बनायें

अब हम निमित्त हैं। तो अगर ये रियलाइजेशन है तो कोई, कोई कैसा भी हो, कैसा भी स्वभाव-संस्कार हो, व्यवहार हो तो मुझे कैसे व्यवहार करना है? बेशक मुझे कोई बुद्ध नहीं बनना है, मूर्ख नहीं बनना है, पर जो भी करना है वो भी ढंग से करना है। समझदारी से, अलौकिकता से करना है।

तो अगर खुद ज्ञान स्वरूप हैं तो आप इस प्रकार से सोचेंगे। रिएक्शन नहीं आयेगा और आपका व्यवहार ठीक चलेगा। पर ज्ञान हो। क्यों बाबा, दादियां, बहनें कहती हैं कि— 'रोज क्लास करें, रोज मुरली सुनो'। क्योंकि जब हम ज्ञान-रतों से भरपूर होंगे तो हमारी मन्सा ठीक रहेगी। उसने ऐसा-ऐसा बोला मैं डिस्टर्ब हो गयी, पर क्यों हो गयी? मुझे क्यों होना है? बोला तो उसने है ना, उनकी वाणी खराब थी। मुझे क्यों अवस्था बिगाड़नी चाहिए? मुझे क्यों स्वीकार करना चाहिए? मैंने ऐसा किया नहीं है, मैं ऐसी हूँ नहीं। तो मैं क्यों स्वीकार करूँ? बाबा कहते हैं ना— आपस में कुछ भी एक-दो को कहते हैं, आप

अपनी रूहानियत में स्थित हो जाओ।

भल हमें मिलके पुरुषार्थ करना है, बाबा कहते हैं— संगठन में रहते हुए, व्यक्तिगत पुरुषार्थ में रहे, अपने आपको ज्यादा रूहानी बनाओ, अलौकिक बनाओ, और उसके लिए बाबा ने जो कहा है वो टाइल रियलाइज करो कि हम ज्ञानी तू आत्मा हैं, 'सत्य-ज्ञानी' आत्मा हैं। भल दुनिया में बहुत पढ़े-लिखे हैं, पर आत्म-स्थिति को उच्च, शुद्ध, शक्तिशाली, एकरस बनाना वो ज्ञान तो वहाँ नहीं है ना बेचारों के पास! हम सत्य-ज्ञानी आत्मायें हैं। हम परमात्म-योगी हैं। अब हमारा योग किससे है? डायरेक्ट भगवान से। अब हम आत्माओं से, धर्मात्माओं से, देवात्माओं से, मनुष्यात्माओं से बुद्धि लगा के नहीं बैठे। अब हम अपना योग परमात्मा से लगाकर बैठे हैं। तो अपनी इस ऊँचाई को, वास्तविकता को, सत्यता को रियलाइज करना है, और उस रियलाइजेशन में हम रहते हैं तो हम अपनी ऊँची अवस्था रख सकते हैं।

जो हुआ उसके लिए हम अच्छा क्या कर सकते हैं, वो करना है। तो बहुत छोटी-छोटी कॉमन बातों में हम अपनी स्थिति ऊँची-नीची करते ही रहते हैं।

कोई चीज़ फूट गई, एक चीज़ के पीछे-कैसे फूट गई, क्या हुआ, ध्यान नहीं दिया, अरे कितनी वैल्युएबल थी। चीज़ के लिए अवस्था बिगाड़ देते हैं। चीज़ वैल्युएबल या अवस्था वैल्युएबल? ठीक है, हम शान्ति से कह रहे हैं कि बहुत अच्छी चीज़ थी, सम्भालने जैसे थी, थोड़ा ध्यान से करिये। हम ऐसे भी तो कह सकते हैं ना! पर अवस्था बिगाड़ के नहीं कहें। फिर हमारे शब्द भी बिगड़ेंगे, उसकी भी अवस्था बिगड़ेगी। फिर घण्टा, दो घण्टा, चार घण्टा प्रभाव चलेगा, आपस में मुँह चढ़ जायेंगे। बोलना भारी हो जायेगा, होती है ना ये सब चीज़ें! वैल्युएबल क्या है? हमें हर चीज़ सम्भालनी है। पर चीज़ें हमारे लिए हैं। हमारी अवस्था उन चीज़ों के लिए नहीं। तो प्रैक्टिकल में हमें अचल-अडोल बनना है।



अम्बिकापुर-छ.ग.। सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय बी.एड. कॉलेज अम्बिकापुर के तत्वाधान में ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा 15 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. पार्वती बहन व ब्र.कु. पूजा बहन द्वारा विभिन्न विषयों के तहत प्रशिक्षणार्थियों और शिक्षकगणों को आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के बारे में बताया गया। शिविर में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्रद्धा मिश्रा, महाविद्यालय के शिक्षकगण एवं करीब 200 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। अंत में ब्र.कु. विद्या दीदी द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियों को वैल्यु एजुकेशन कोर्स का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जानें....

माया क्या है और रावण क्या है?

बाबा के मधुर महावाक्य को हम सभी रोज सुन करके आत्मसात करते रहते हैं। परंतु बीच-बीच में कभी-कभी ब्राह्मणों को माया सताती है और तभी बाबा कहते हैं बच्चे खबरदार रहना है। रावण बड़ा जबरदस्त है, बड़ा दुश्मन है। तो मन में एक सवाल उठा कि माया और रावण एक ही है या अलग है? क्या कहेंगे! फिर बाबा कई बार कहते हैं माया मेरी आज्ञाकारी बच्ची है, रावण को तो कभी बच्चा कहा नहीं। तो एक ही है या अलग है? अभी कन्फ्यूज्ड हो रहे हैं... वास्तव में अगर देखा जाये तो माया और रावण दोनों अलग चीज हैं। एक नहीं हैं। तो माया किसको कहे और रावण किसको कहे? क्योंकि कई बार होता है रावण और हम कहते हैं माया आ गई, माना हल्का ले लिया। माया माना फीमेल कैरेक्टर के रूप में दिखाया, रावण माना मेल कैरेक्टर के रूप में दर्शाया। दोनों के ऊपर अगर हम चिन्तन करें तो दोनों अलग चीज हैं।

बाबा भी जब कहता है कि माया मेरी आज्ञाकारी बच्ची है, जब भी कोई ब्राह्मण ज्ञान में चलता है तो बाबा माया को कहते,

देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है? बाजार में एक मटका लेने जाओ तो कितनी बार ठोक-ठोक कर देखते हैं कि कच्चा है कि पक्का है? ठीक इसी तरह भगवान को जिसके हाथ में अढ़ाई हजार साल राज्य सौंपना हो विश्व का, तो कच्चे के हाथ में थोड़े देगा! उनको तो पक्के चाहिए। इसीलिए बाबा ऐसा कहते कि देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है!

कभी-कभी ब्राह्मण शिकायत करते हैं कि भक्ति में भी इतनी परीक्षा नहीं देनी पड़ी, जितनी यहाँ देनी पड़ती है। क्यों? क्योंकि यहाँ बाबा को ऐसे बच्चे नहीं चाहिए जो थोड़ी-सी बात आये और सोडा वाटर हो जाये। बाबा को तो मजबूत बच्चे चाहिए। जो माया से, रावण से युद्ध करके विजयी हो जायें, ऐसे बच्चे चाहिए। इसीलिए प्रथम दिन से ही माया परीक्षा लेना चालू करती है, ठोकना चालू करती है ये कच्चा है या पक्का है? जैसे ही कोर्स पूरा होता है, और रोज मुरली क्लास में जाने लगते हैं तो सबसे पहले घर वाले ही पूछना चालू करते हैं - क्या बात है, ये रोज-रोज सुबह कहाँ भाग रहे हो? घर का काम-काज है कि नहीं? परीक्षा आती है कि नहीं आती है? माताएं अनुभवों हैं कि पहले दिन से ही परीक्षा चालू होती है। लेकिन फिर भी निश्चयबुद्धि होने के

कारण डट के रहे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने समझ लिया कि ये रोज जाने वाले हैं। बोलना बंद किया। उसके बाद जैसे ही प्याज-लहसुन छोड़ा तो फिर परीक्षा शुरू होती है कि ये कौन-सा नया धर्म आया है? ये कहाँ लिखा हुआ है कि ये सब छोड़ दो! अब जो कच्चे होंगे वो तो छोड़

ब्राह्मण जीवन पूरी रामायण है। जिससे हम गुजरते हैं, वो ब्राह्मण जीवन है। जिसको हम रामायण के रूप में, महर्षि वाल्मीकि ने लिखा कि ब्राह्मण जीवन कैसा होता है...!

तो कहानी आरंभ होती है दशरथ से। और दशरथ से जब कहानी आरंभ होती

जिस कारण जो प्रालम्ब मिली, सतयुग और त्रेतायुग की, उसमें हम दशरथ होकर जीते थे। जिसका राज्य कहाँ था, अयोध्या। जहाँ कभी युद्ध नहीं हुआ। तो सतयुग और त्रेतायुग में किसी के जीवन में युद्ध नहीं था। क्योंकि दशरथ थे और जिनकी तीन साथियाँ थीं। तीन साथियाँ कौन-सी थीं- सबसे पहली 'कौशल्या'। कौशल्या माना सर्व कुशलताओं से सम्पन्न। अर्थात् बाबा ने हमें 16 कला सम्पूर्ण बनाया था, तो ये हमें 16 कला, ये सारी कुशलताएँ, हमें हासिल थी। ये पहली साथी थी हमारी। दूसरी साथी थी - 'कैकेयी', अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा। तो प्राप्ति भी अखूट थी हमारे जीवन में। इसीलिए कहा जाता कि जब कैकेयी को पूछा गया कि- 'माँगें तुम्हें जो कुछ चाहिए वो मिल जाएगा'। दो वरदान माँगने के लिए कहा था, तो उसने कहा मुझे किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है, सबकुछ है मेरे पास। आवश्यकता पड़ने पर कहेंगे लेकिन अभी तो कुछ नहीं चाहिए। ऐसी सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्माएँ सतयुग और त्रेतायुग में थे। और तीसरी साथी थी हमारी 'सुमित्रा'। यानी सर्व के प्रति हमारा मित्रता का भाव एक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ हम जीते थे। तो ये हमारी तीन साथियाँ थी, दशरथ आत्मा की।

- क्रमशः

बाजार में एक मटका लेने जाओ तो कितनी बार ठोक-ठोक कर देखते हैं कि कच्चा है कि पक्का है? ठीक इसी तरह भगवान को जिसके हाथ में अढ़ाई हजार साल राज्य सौंपना हो विश्व का, तो कच्चे के हाथ में थोड़े देगा! उनको तो पक्के चाहिए।

इसीलिए बाबा ऐसा कहते कि देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है!

के चले जायेंगे। बाबा कहते, मुझे तो पक्के बच्चे चाहिए। जो पक्के होते हैं, अपने दृढ़ता में रहते हैं वो उन परीक्षाओं में भी सहज, सहनशील होकर के भी, मजबूत बन कर के भी पार कर जाते हैं। इसीलिए देखो रामायण के अन्दर अगर देखा जाये तो पहले फीमेल कैरेक्टर्स आती है रावण तो बाद में एंटर होता है। पहले तो शूर्पणखा, मंथरा यही सब आती हैं। रावण तो बहुत बाद में आया। इसीलिए

है, यानी बाबा ने भी हमें सबसे पहले दशरथ बनाया, सतयुग में। संगमयुग के पुरुषार्थ से हम दशरथ बनते हैं अर्थात् स्वराज्य अधिकारी आत्मा। जिसका अपनी कर्मेन्द्रियों के ऊपर, दसों इन्द्रियों के ऊपर सम्पूर्ण अधिकार है। तो सतयुग के अन्दर हम ऐसी दशरथ आत्माएँ थीं। सम्पूर्ण स्वराज्य अधिकारी- पाँच स्थूल इन्द्रियाँ और पाँच सूक्ष्म इन्द्रियाँ, ऐसी हमारी स्थिति हमने अन्त में बनाई थी।



दुबई। एशिया-अफ्रीका और अमेरिका बिजनेस एवं सोशल फोरम के 20वें संस्करण में आयोजित पुरस्कार वितरण और बिजनेस शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व में राजयोग के प्रचार और प्रसार के लिए डॉ. ब्र.कु. दीपक हर्षे को 'ग्रेटेस्ट लीडर्स एंड ब्रांड्स 2023' से कामधेनु इस्पात लिमिटेड के संचालक सुनील अग्रवाल के हाथों सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संयुक्त अरब अमीरात में गाम्बिया के राजदूत महामहिम फाफा सान्यांग उपस्थित रहे। साथ ही ब्रह्माकुमारीज के दुबई सेवाकेन्द्र से राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. दीपि बहन एवं ब्र.कु. उदया बहन भी मौजूद रहे।



धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मोटर साइकिल रैली निकालकर आजादी का जश्न मनाया गया। नन्हें मुन्ने बच्चे देश की आजादी के वीर सपूतों की वेश भूषा में उनके बलिदान की याद दिला रहे थे। इस मौके पर ब्र.कु. सरिता दीदी ने धमतरी शहर के मुख्य शास्त्री चौक में सभी शहरवासियों को आजादी का संदेश भी दिया।



तलेन-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा मित्रता दिवस के अवसर पर 'जीवन मूल्य के निर्माण में मित्र का महत्व' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज की राजगढ़ जिला संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, तलेन टी.आई. जितेंद्र अनजाने, वरिष्ठ डॉक्टर श्रीनाथ दास कारोड़िया, रिटा. बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. वैशाली बहन, राधारमण तिवारी तथा लक्ष्मी नारायण यादव।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। मध्य प्रदेश दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा निर्वाणा फाउंडेशन में दिव्यांग एवं मंदबुद्धि बच्चों के लिए आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. मोनिका बहन, भोपाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. आशीष भाई, ब्र.कु. रूबी बहन, ब्र.कु. नंदनी बहन, निर्वाणा फाउंडेशन के संचालक संजय सिंह तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



पुणे-पिसोली(महा.)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के जगदम्बा भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में पिसोली ग्रामपंचायत के सरपंच स्नेहल दगडे, मछिन्द्र दगडे, कांग्रेस कार्यकर्ता सुभाष थोटे, व्यवसायी मिलिंद मासाल, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. दशरथ भाई, सेवाकेन्द्र की सह-संचालिका ब्र.कु. शीतल बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत- वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

प्राचीन काल में आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का उपयोग कर कई बीमारियों को दूर किया जाता था। समय के साथ-साथ साइंस में भी बदलाव हुआ, लेकिन आज भी ज़रूरत पड़ने पर कुछ मामलों में जड़ी-बूटियों का सहारा लिया जाता है। इनमें से एक जड़ी-बूटी है गिलोय। ये एक बेल है जो मुख्य रूप से जंगलों, खेती की मेड़ों और पहाड़ों की चट्टानों पर पाई जाती है। इसकी तासीर गर्म होती है। इसका तना हरा और देखने में किसी रस्सी-सा लगता है। गिलोय की पत्तियां प्रोटीन, कैल्शियम व फास्फोरस से भरपूर होती हैं, इसलिए गिलोय के पत्ते के फायदे भी कई हैं। इसे अमृता(अमृत के समान) के नाम से भी जाना जाता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि यह जिस भी पेड़ से लिपटकर बढ़ती है, उस पेड़ के औषधीय गुण भी इसकी बेल में समाहित हो जाते हैं। इसी कारण नीम के पेड़ पर मौजूद गिलोय के बेल को लाभकारी और सबसे बेहतर माना जाता है। इसलिए गिलोय के औषधीय गुण किस तरह स्वास्थ्य समस्याओं से बचाव करते हैं, इसके बारे में आज हम जानेंगे...

रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाए

रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने से व्यक्ति बीमारी की चपेट में जल्दी आ जाता है। ऐसे में गिलोय का सेवन लाभकारी साबित हो सकता है। बताया जाता है कि

ठीक करने में भी देखे जा सकते हैं। इसके लिए गिलोय के पत्ते के फायदे हो सकते हैं। लाभ पाने के लिए गिलोय की पत्तियों का रस या काढ़ा बनाकर उसे शहद के साथ बुखार होने पर ले सकते हैं।

पाचन शक्ति बढ़ाए

जी हाँ, गिलोय के औषधीय गुण में से एक



है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि गिलोय जूस के फायदे डायबिटीज़ में भी हो सकते हैं।

गठिया की समस्या में राहत

विशेषज्ञों की मानें, तो गिलोय के गुण में एंटी-इंफ्लेमेटरी यानी सूजन को कम करने वाला प्रभाव होता है। साथ ही इसमें एंटी-अर्थराइटिक और एंटी ऑस्टियोपोरोटिक

गिलोय के उपयोग से बढ़ती उम्र के प्रभाव को घटाया जा सकता है। कई रासायनिक तत्वों की उपलब्धता के कारण गिलोय में एंटी एजिंग प्रभाव भी मौजूद होते हैं। इस कारण यह सेहत संबंधी कई समस्याओं को दूर करने के साथ-साथ बढ़ती उम्र के प्रभाव को भी कम कर सकता है। इस कारण यह कहा जा सकता है कि संतुलित मात्रा में गिलोय का नियमित सेवन त्वचा को जवां बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभा सकता है।

काढ़े के रूप में इसका इस्तेमाल 20-30एमएल तक दिन में दो बार किया जा सकता है। इसके लिए इसकी जड़ और तने को उबाल कर इसका काढ़ा तैयार करना होगा।

गिलोय के नुकसान

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी भी चीज़ का अधिक सेवन कुछ दुष्परिणाम प्रदर्शित करता है। उसी प्रकार अधिक मात्रा

अपनी इस शरीर रूपी मशीन का अच्छे से रखें ख्याल...

गिलोय हमारे शरीर को रखता बीमारियों से दूर

गिलोय के औषधीय गुण में से एक इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभाव भी है जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकता है। इस आधार पर माना जा सकता है कि गिलोय के लाभ प्रतिरोधक क्षमता के लिए भी हैं। प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में गिलोय जूस के फायदे ज़्यादा देखे जाते हैं।

क्रोनिक फीवर के लिए

क्रोनिक फीवर यानी पुराने बुखार में भी गिलोय के लाभ होते हैं। इसके लिए गिलोय के तने और पत्तियों को इस्तेमाल में लाएं। इनमें एंटीपायरेटिक यानी बुखार को ठीक करने वाला और एंटी मलेरियल यानी मलेरिया इंफेक्शन को दूर करने वाला प्रभाव होता है। यही नहीं, इसमें डेंगू जैसे वायरल इंफेक्शन भी शामिल हैं। गिलोय जूस के फायदे क्रोनिक कफ यानी पुरानी खांसी को

यह भी है कि इससे पाचन संबंधी कई समस्याओं जैसे कि डायरिया और दस्त से उबरने में मदद मिल सकती है। इस आधार पर यह माना जा सकता है कि पाचन तंत्र को मजबूत करने में भी गिलोय का उपयोग सहायक साबित हो सकता है। पाचन शक्ति को बढ़ाए रखने में सबसे अधिक गिलोय जूस के फायदे देखे जाते हैं।

डायबिटीज़ को करे नियंत्रित

डायबिटीज़ की समस्या में भी गिलोय के फायदे हो सकते हैं। इसके लिए गिलोय में मौजूद एंटी हाइपरग्लाइसेमिक यानी ब्लड शुगर को कम करने वाले प्रभाव को फायदेमंद माना जाता है। यही कारण है कि यह शरीर में इंसुलिन की सक्रियता को बढ़ाकर ब्लड शुगर को नियंत्रित कर सकता

यानी जोड़ों के दर्द और सूजन से राहत दिलाने वाले प्रभाव भी होते हैं। ये तीनों प्रभाव संयुक्त रूप से गठिया की समस्या को दूर करने में सहायक माने जाते हैं।

आँखों की समस्याओं में लाभकारी

विशेषज्ञों के मुताबिक, इसमें पाया जाने वाला इम्यूनोमॉड्यूलेटरी गुण आँखों के लिए भी फायदेमंद प्रभाव प्रदर्शित करता है। इस संबंध में किए गए एक अन्य शोध में बताया गया है कि गिलोय के गुण आँखों से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा दिलाने में सहायक साबित हो सकते हैं।

बढ़ती उम्र के प्रभाव को घटाए

खून की कमी दूर करने में सहायक

गिलोय में टीनोसोरिन, ग्लूकोसाइड टिनोसोरिक एसिड अच्छी मात्रा में पाया जाता है जो खून को बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके लिए गिलोय के हरे डंठल का जूस बनाकर पिएं। जो एनीमिया से पीड़ित हैं उन्हें गिलोय का सेवन ज़रूर करना चाहिए।

गिलोय का उपयोग

गिलोय का उपयोग करने के निम्न तरीके हैं। आइए, उनके बारे में थोड़ा जान लेते हैं...

गिलोय के तने और पत्तियों को पीसकर इसका जूस बना सकते हैं। इसके जूस की करीब 20 एमएल खुराक दिन में दो बार लेने की सलाह दी जाती है।

में सेवन से गिलोय के नुकसान भी हो सकते हैं।

- यह ब्लड शुगर को कम करता है, इसलिए डायबिटीज़ की दवा लेने वाले इसके उपयोग में सावधानी बरतें, नहीं तो ब्लड शुगर काफी कम हो सकता है।
- इसे पाचन शक्ति के लिए सहायक माना गया है लेकिन गर्म तासीर के कारण इसकी अधिक मात्रा पेट से संबंधित जलन और गैस की समस्या का कारण बन सकता है।
- गर्भवती महिलाएं इसके सेवन से पहले डॉक्टर से सलाह जरूर लें।
- अगर आपको ऑटोइम्यून बीमारी है जैसे : ल्युपस, रुमेटीड गठिया, क्रोहन रोग तो इससे समस्या हो सकती है।



मेहसाना-गुज. ब्रह्माकुमारीज के गॉडली पैलेस सेवाकेन्द्र द्वारा ब्रह्माकुमारीज मेहसाना उपक्षेत्र के स्वर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री के 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के अंतर्गत देश के बलिदानियों को मोमबत्ती जलाकर व हाथ में मिट्टी लेकर सीआईएसएफ के जवानों की उपस्थिति में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर तोलानी आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर एवं कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ब्र.कु. डॉ. किरण रावल, डेयरी फूड एंड प्रा.लि. के चेयरमैन किरीट भाई बी. पटेल, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुहाग भाई श्रीमाली, सीआईएसएफ के इंसपेक्टर महावीर सिंह, रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर भारती बहन, ब्रह्माकुमारीज की उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. कुसुम बहन, ब्र.कु. अशोक भाई पंड्या तथा अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।



डूँदौर-शीतल नगर(म.प्र.) ब्रह्माकुमारीज द्वारा मित्र पर्यावरण वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाली महोत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान महाराणा प्रताप नगर की वार्ड पार्षद सीमा डाबी, कृष्ण वल्लभ डाबी, रामबाग सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. छाया बहन, शीतल नगर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. चंद्रकला बहन, समाजसेवी जगदीश अग्रवाल एवं हीरालाल गुप्ता तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



गोंडल-गुज. श्रीमत भागवत यज्ञ में शास्त्री श्री कल्पेश जोशी जी को ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र में आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. भानु बहन।



नवी मुम्बई-वाशी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में राष्ट्रध्वज लहराते हुए पूर्व नगरसेविका शिल्पा मोरे, पूर्व सभापति प्रकाश मोरे, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. प्रीति दीदी, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।



पारडी-गुज. सेवानिवृत्त शिक्षक समारोह कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पारुल बहन। मंचासीन हैं वलसाड विधायक भरत भाई पटेल, धरमपुर विधायक अरविंद भाई पटेल, वलसाड शिक्षक संघ अध्यक्ष दीपक पटेल तथा अन्य।



सिवनी-म.प्र. नशा मुक्त भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज द्वारा शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय सिवनी में आयोजित नशा मुक्ति के कार्यक्रम में ब्र.कु. आस्था बहन, ब्र.कु. कविता बहन, ब्र.कु. यशवंत भाई, विद्यालय के प्राचार्य एस.के. सिंह, क्रीड़ा शिक्षक देवेंद्र ठाकुर, व अन्य स्कूल स्टाफ सहित 1400 विद्यार्थी मौजूद रहे। सभी ने इस मौके पर व्यसन मुक्त रहने का संकल्प लिया।



ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज के साईटिस्ट्स, इंजीनियर्स एंड आर्किटेक्ट्स विंग द्वारा 'इन्विजनिंग अ बेटर टूमोरो' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते हुए अशोक चन्द्र पांडा, मिनिस्टर ऑफ साईंस एंड टेक्नोलॉजी, ओडिशा, भुवनेश्वर। मंचासीन हैं ब्र.कु. गीता बहन, भुवनेश्वर, ब्र.कु. मोहन सिंघल, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, काठमाण्डू नेपाल, राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई, पानोपत तथा अन्य।



बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। श्री श्री महायोगधारा पीठ में आयोजित कार्यक्रम के दौरान आचार्य मनोहर भण्डारी एवं राज्य के कैबिनेट मंत्री रामकुमार पटेल के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी।



पन्ना-म.प्र.। कुसुम सिंह महदेले, पीएचई, जेल विभाग, पूर्व कैबिनेट मंत्री, म.प्र. शासन को जन्मदिन की बधाई एवं ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता बहन।



रांची-ज.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत बैंक ऑफ इंडिया से 16 में आयोजित रक्षाबंधन महोत्सव के दौरान शाखा प्रबंधक श्रीधर शेषाद्री, एडमिन लोकेश कामद, निलेश सोलंकी एवं अन्य स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने व नशा एवं अन्य बुराइयों को छोड़ने का संकल्प फॉर्म भराने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, ब्र.कु. कृपाल बहन एवं ब्र.कु. पारुल बहन।



ग्वालियर-माधवगंज(म.प्र.)। हर घर तिरंगा अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपहार भवन में 'एक शाम राष्ट्र के नाम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं वसुंधरा होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. श्रीराम सविता, ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी तथा ब्र.कु. प्रहलाद भाई। इससे पूर्व सेवाकेन्द्र में झंडा वंदन हुआ जिसमें नंदन सिंह रैतेला प्रमुख रूप से मौजूद रहे।



अलीराजपुर-म.प्र.। डॉ. अभय अरविंद, जिला कलेक्टर को ग्लोबल सम्मिट कॉन्फ्रेंस का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. माथुरी बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन व ब्र.कु. नारायण भाई।



वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। भारत सरकार के आईसीडीएस प्रोजेक्ट के अंतर्गत पूरे गुजरात राज्य में चल रहे नारी वंदना सप्ताह के तहत वडोदरा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन एवं ब्रह्माकुमारीज द्वारा शहर की सक्रिय आंगनवाड़ी से लगभग 700 बहनों के लिए 'मूल्यान्वित समाज के लिए महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'नारी शक्ति महासम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. अरुणा दीदी, सह संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन से प्रोग्राम ऑफिसर, अर्बन आईसीडीएस अंबिका बहन जायसवाल, प्रकाश केमिकल के मैनेजिंग डायरेक्टर दिलीप भाई शाह, योगाचार्य दुष्यंत भाई मोदी व नैना बहन तथा काशी विश्वनाथ मंदिर के ट्रस्टी अरविंद भाई पंचाल।



ब्लेसिंग्स वो चीज़ है, जो असंभव को भी संभव कर देती

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जैसे हम किसी बीमारी का इलाज कराने के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं तो वो क्या करता है। वो दवा देता है और साथ में परहेज बताता है। उसी प्रकार ज्ञान भी एक दवा है जो हमारे मन की बीमारी का इलाज करती है। आपने अपने जीवन में सच्चा ज्ञान लेना शुरू किया। मानो कि आपने दवा लेना शुरू किया।

हमें जीवन में कभी भी किसी भी चीज़ के लिए यह नहीं कहना चाहिए "मैं कोशिश करूंगा"। परमात्मा कहता है "सिर्फ हाँ जी" करो और बाकी काम वो स्वयं कर लेगा। जब आपका बच्चा आपको किसी चीज़ के लिए "हाँ जी" करता है, तो आपसे उसको कितनी दुआएं और आशीष मिलती है। ब्लेसिंग्स वो चीज़ है, जो असंभव को भी संभव कर देती है। जीवन के बड़े से बड़े विघ्न को समाप्त कर देती है। व्यक्ति के भाग्य को बदल सकती है। ये तो मनुष्यात्माओं की ब्लेसिंग है। सोचिए, अगर हमें परमात्मा की ब्लेसिंग मिलेगी तो जीवन में क्या परिवर्तन आ जाएगा।

आप अभी तक जिन-जिन चीज़ों के लिए कह रहे थे ठीक है, सोचते हैं, कोशिश करेंगे...। आज से उसको बदलते हैं और कहते हैं वो(परमात्मा) करा रहा है। इससे सारा कार्य सहज हो जाता है। इसे लाखों लोगों ने अपने जीवन में अपनाया है। अभी हम डार्क सर्कल में जी रहे थे। अब हमें उससे निकलकर व्हाइट सर्कल की ओर आना है। अगर हमने कुछ भी ऐसा खाया, पिया, जिसका वायब्रेशन डार्क है, नकारात्मक ऊर्जा है, तो फिर मेहनत ज़्यादा लगती है और रिजल्ट कम मिलता है। यदि हमें खाने-पीने की चीज़ों को सात्विक बना लिया तो इससे जीवन में बहुत फायदे होते हैं। कई बार हम सोचते हैं कि बहुत नियम हैं ये नहीं करो, वो नहीं करो। दरअसल ये नियम नहीं हैं, ये हमारे फायदे के लिए परहेज हैं। जैसे हम किसी बीमारी का इलाज कराने के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं तो वो क्या करता है। वो दवा देता है और साथ में परहेज बताता है। उसी प्रकार ज्ञान भी एक दवा है जो हमारे मन की बीमारी का इलाज करती है। आपने अपने जीवन में सच्चा ज्ञान लेना शुरू किया। मानो कि आपने दवा लेना शुरू किया। हम सबको पता है कि दवा के साथ परहेज भी ज़रूरी होता है तभी बीमारी जल्दी ठीक होती है। इसे सिर्फ तीन महीने के लिए एक्सपेरिमेंट करके देखना है। आपको "हाँ जी" भी सिर्फ तीन महीने के लिए आपने आप से और परमात्मा से करना है। फिलहाल जीवर भर के लिए अभी "हाँ जी" नहीं करना।

हमें ऐसे ही कभी भी कोई बात नहीं माननी चाहिए। पहले प्रयोग। प्रयोग के बाद अनुभव। जब अनुभव हो जाएगा तब आपने आपको और परमात्मा को कहना जीवन भर के लिए "हाँ जी"। तीन महीने के लिए हम रोज सुबह ध्यान करेंगे,

सात्विक भोजन करेंगे और सात्विक चीज़ें ही पिएंगे। हमें ऐसी कोई भी चीज़ खानी-पीनी नहीं चाहिए, जिससे मस्तिष्क की ऊर्जा का ह्रास हो या डाउन होती हो।

मोबाइल के विषय में भी बात करना ज़रूरी है। क्या ऐसा मुमकिन है कि हम सारा दिन फोन इस्तेमाल ही न करें? खुद से पूछें कि फोन हमसे क्या छीन रहा है? ये क्यों हमारे समय का नाश कर रहा है। असल में वो फोन नुकसान नहीं कर रहा है लेकिन उस पर जो सारा दिन हम देख रहे हैं, पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं वही नुकसानदेह है। फोन को फोन की तरह यूज़ करना था लेकिन आज वो क्या बन गया? सूचनाओं का ज़रिया। और सूचनाओं की गुणवत्ता भी कैसी है। तो जो हम सुनेंगे, पढ़ेंगे, देखेंगे - वैसा हम बनेंगे। ये लॉ है। सारा दिन फोन पर जो सूचनाएं आ रही हैं। सिर्फ वही सुनना, पढ़ना, देखना जैसा बनना है। कई बार लोग कहते हैं देखे बिना कैसे पता चलेगा कि अच्छी चीज़ है कि नहीं। मैं कहती हूँ कि देखे बिना पता चल जाता है कि कैसी वाली चीज़ है। अब हमें गॉसिप करने के लिए लोगों की भी ज़रूरत नहीं है। गॉसिप सारा दिन ऑनलाइन मिल रही है। जरा सोचिए, दिन की शुरूआत सुबह-सुबह गॉसिप सुनकर करेंगे, और फिर कहते हैं ना कि सुबह-सुबह किसका चेहरा देखा था। हम आजकल मोबाइल का चेहरा देखते हैं। अब सुबह-सुबह सबसे पहले परमात्मा का ज्ञान सुनें। जो सुनेंगे, पढ़ेंगे, देखेंगे तो हम वैसा बनेंगे। ये बैलेंस वर्क में नहीं लाना है। ये बैलेंस हमें लाइफ में लाना है। लाइफ मतलब एनर्जी। वो लाइफ भूकुटि के मध्य में है। जब ये जीवन निकल जाता है तो ये सिर्फ शरीर रह जाता है। जीवन में संतुलन आया(आत्मा में) तो बाहर सब ठीक हो जाएगा।



राजकोट-पंचशील(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत 'नशा मुक्त भारत' की थीम पर 100 फीट का लार्ज चित्र बनाया गया। जिसमें छः साल के बच्चे से लेकर 75 वर्ष की आयु तक के 24 लोगों ने उमंग-उत्साह से भाग लिया और 3 घंटे में यह चित्र पूरा किया। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग भारत सरकार के अधिकारी उपस्थित रहे और प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। साथ ही ब्र.कु. भाई-बहनें भी मौजूद रहे।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की नवनिर्भूत कुलपति प्रो. डॉ. शुभा तिवारी को परमात्म परिचय देकर ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू में आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा बहन।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता

एक बार की बात है सीमा नाम की एक महिला थी। उसकी एक सास थी जिसका नाम रमा था। जोकि बहुत खचीली थी। सीमा जहाँ बचत पर जोर देती थी वही उसकी सास कोई बचत नहीं करती और बेफिजूल खर्च करती थी।

एक बार सीमा ने अपनी सास को कुछ पैसे रखने के लिए दिए जिसको वह अगले दिन बैंक में जमा करवाने वाली थी। उसकी सास उन पैसों से बाज़ार से अपने लिए कपड़े लेकर आ गयी।

अगले दिन जब सीमा ने अपनी सास से पैसे मांगे तो सास ने बताया वह तो उसने खर्च कर दिए हैं। उसने सीमा को कहा बचत करने की कोई ज़रूरत नहीं है। जिंदगी को अच्छे से जीना चाहिए। सीमा अपनी सास को बेफिजूल घर की लाइट जलाने से मना करती थी। जोकि उसकी सास को बिल्कुल पसंद नहीं था। वह इन बातों पर अपनी बहू सीमा को डांट देती थी। इसके बाद सीमा ने भी निर्णय कर लिया कि वह अपनी सास को रोकेगी नहीं। सीमा ने इसके बाद अपनी सास के कमरे का बल्ब लाकर बदल दिया।

सास के पूछने पर सीमा ने कहा कि अब वह जितना चाहे उतनी लाइट जला सकती है। एक दिन सीमा की सास को पकोड़े खाने की इच्छा हुई। उसने सीमा को पैसे देकर कहा कि जाकर राजू हलवाई की दुकान से पकोड़े ले आए।

कुछ देर में सीमा अपनी सास को पकौड़े

लाकर देती है जो उसको बहुत पसंद आते हैं। इसी तरह दिन बीते जा रहे थे और सीमा ने अपनी सास को फिजूल खर्ची पर टोकना बंद कर दिया था। एक दिन सीमा की सास बीमार हो गयी।

उसको जब हॉस्पिटल में भर्ती कराया तो डॉक्टर ने एक बड़ी बीमारी बता कर शहर के हॉस्पिटल में रेफर करने को कहा। जब सीमा के पति ने डॉक्टर से इसका खर्च पूछा तो डॉक्टर ने

में बचत करके जोड़े हैं। इसके बाद कुछ दिनों बाद सीमा की सास शहर में से अपना इलाज करा कर आ गयी। अब वह पूरी तरह से स्वस्थ थी।

उसने आकर सीमा से पूछा कि तूने इतने पैसे कैसे जोड़े मैं तो तूझे बचत करते समय हमेशा मना करती थी।

सीमा ने बताया कि मैंने सारे घर में कम बिजली प्रयोग करने वाले बल्ब लगाए

पैसे की बचत



2 लाख बताया।

यह सुनकर सीमा का पति और उसकी सास बहुत दुःखी हो गए कि इतने पैसे हम कहाँ से लाएंगे, लेकिन सीमा ने डॉक्टर को अपनी सास को शहर के डॉक्टर को रेफर करने को कहा। जिससे उसके पति और सास हैरान हो गए।

सीमा ने बताया कि यह पैसे उसने घर खर्च

और जब भी आप मुझे बाहर से पकोड़े लाने को कहती थी तो मैं घर पर ही आपको पकोड़े बनाकर खिलाती थी। उसने सीमा की बहुत तारीफ की और खुद भी आगे से पैसे बचाने का निर्णय लिया।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें फिजूलखर्ची से बचकर पैसे का सही इस्तेमाल करना चाहिए।

एक सेकण्ड में अपने को अपने सम्पूर्ण निशाने और नशे में स्थित कर सकते हो? सम्पूर्ण निशाना क्या है, उसको तो जानते हो ना। जब सम्पूर्ण निशाने पर स्थित हो जाते हैं, तो नशा तो रहता ही है। अगर निशाने पर बुद्धि नहीं टिकती तो नशा भी नहीं रहेगा। निशाने पर स्थित होने की निशानी है नशा। तो ऐसा नशा सदैव रहता है? जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। जैसे कोई हद का नशा पीते हैं तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है - इसने नशा पिया हुआ है। इसी प्रकार, यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है, इसी में स्थित रहने वाला भी दूर से दिखाई तो देगा ना। दूर से ही वह अवस्था इतना महसूस करें - यह कोई ईश्वरीय लगन में रहने वाली आत्मायें हैं। ऐसे अपने को महसूस करते हो? जैसे आप कहाँ भी आते-जाते हो, तो लोग देखने से ही समझें कि यह कोई प्रभु की प्यारी-न्यारी आत्मायें हैं। ऐसे अनुभव करते हैं? भक्ति मार्ग में भी ऐसी आत्मायें होती हैं। उन्होंने के नैन-चैन से प्रभु प्रेमी देखने आते हैं। तो ऐसी स्थिति इसी दुनिया में रहते हुए, ऐसी कारोबार में चलते हुए समझते हो कि यह अवस्था रहेगी या सिर्फ लास्ट में दर्शनमूर्त की यह स्टेज होगी? क्या समझते हो- क्या अन्त तक साधारण रूप ही रहेगा व यह झलक चेहरों से दिखाई देगी? व सिर्फ लास्ट टाइम जैसे पर्दे के अन्दर तैयार हो फिर पर्दा खुलता है और सीन सामने आकर समाप्त हो जाती है, ऐसे होगा? कुछ समय यह झलक दिखाई देगी। कई ऐसे समझते हैं कि जब फर्स्ट, सेकण्ड

आत्मायें जो निमित्त बनीं वही साधारण गुप्त रूप अपना साकार रूप का पार्ट समाप्त कर चले गये तो हम लोगों की झलक फिर क्या दिखाई देगी? लेकिन नहीं। 'सन शोज फादर' गाया हुआ है। तो फादर का शो बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे।

'अहो प्रभु' की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी व पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी वह कब, कैसे आयेगी? जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया उन्होंने को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं, यह कब मानेंगे कि बरोबर बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया? तो यह प्रैक्टिकल रूहानी झलक और फरिश्तेपन की झलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे। अपने को और आप निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्टेज को देखते हुए अनुभव करेंगे- बाप ने इन्हें को क्या बनाया! और फिर पश्चाताप करेंगे। अगर यह झलक नहीं देखते तो क्या समझेंगे? इतना समय ज्ञान तो नहीं लेंगे जो नॉलेज से आपको जानें। तो यह प्रैक्टिकल चेहरे से झलक और फलक दिखाई देगी। बाप के तो महावाक्य ही हैं कि मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। लेकिन विश्व के आगे कौन प्रख्यात होंगे? वह साकार में बाप का कर्तव्य था, प्रैक्टिकल में बच्चों का कर्तव्य है प्रख्यात होने का और बाप का कर्तव्य है बैकबोन बनने का, गुप्त रूप में मददगार बनने का। इसलिए ऐसे भी नहीं कि जैसे मात-पिता का गुप्त पार्ट चला वैसे ही अन्त तक गुप्त वातावरण रहेगा। जयजयकार शक्तियों की गाई हुई है और 'अहो प्रभु' की पुकार बाप के लिए गाई हुई है।



इंदौर-शीतल नगर(म.प्र.)। यादव नंद नगर के बगीचे में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के अंतर्गत पाषंड श्रीमति सीमा वल्लभ डाबी के नेतृत्व में पौधारोपण, शपथ ग्रहण एवं राष्ट्रगान का आयोजन हुआ जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के दौरान लक्ष्मीनारायण साहू, वरिष्ठ नेता, भाजपा, श्रीमति सीमा कृष्ण वल्लभ डाबी, वार्ड पाषंड, ब्र.कु. छाया बहन, रामबाग सेवाकेन्द्र संचालिका, अनिल तिवारी, मंडल अध्यक्ष, राजेंद्र गुप्ता, समाजसेवी, ब्र.कु. चंद्रकला बहन, शीतल नगर सेवाकेन्द्र संचालिका, गिरिश दीक्षित, भाजपा नेता, रमेश चंद्रवंशी, सब इंजीनियर, कृष्ण वल्लभ सोनी तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



अमरावती-बडनेरा रोड(महा.)।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के विश्व परिवर्तन भवन में आयोजित कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक अरविंद परदेसी, नीरज हसवाना, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता दीदी, ब्र.कु. विशाल तपड़िया, ब्र.कु. अमरनाथ भाई सहित 400 से अधिक ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



कामठी-नागपुर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में भारत सरकार के क्षेत्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र द्वारा 'जैविक एवं प्राकृतिक खेती' विषय पर कृषि विस्तार अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान क्षेत्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र के निदेशक डॉ. ए.एस. राजपूत, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, रूची बायोकैमिकल्स के निदेशक डॉ. महेन्द्र ठाकुर, कार्यक्रम संयोजक डॉ. प्रियंका मेहता, डॉ. रचना पांडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईसीआर) नागपुर, महा. सरकार के कृषि विस्तार अधिकारी सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी व ब्र.कु. भाई-बहनें सम्मिलित रहे।



मरोली-नवसारी(गुज.)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज वंदन के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मुकेश बहन, मरोली ग्राम अग्रगण्य भीखू भाई राजपूत, व्यापारी दिनेश शाह तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

भारतीय त्योहारों में शक्ति अर्थात् महिला का बड़ा ही महत्वपूर्ण रोल है। इसीलिए उसको पूजते हैं। पुरुष जब चारों ओर से मूझ जाता है, उलझ जाता है, उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता तब वो कहाँ जाता है? देवताओं के पास तो नहीं ना! सोचो...! वो जाता है दुर्गा के पास। उससे शक्ति मांगता है। क्योंकि शिव-शक्ति से ही वो आने वाली चुनौतियों को चैलेंज कर सकता है। ये भावना उनकी कहीं न कहीं भीतर सुषुप्त रूप में आज भी छिपी हुई है। इसीलिए भारत भूमि पर परमात्मा ने महिलाओं को सशक्त बनाया; और उसके द्वारा समाज में विकृत मानसिकता को बढ़ावा देने वाले पर विजय दिलायी। इसीलिए यहाँ भारत में 'वन्दे मातरम्' कहते हैं और कहीं, किसी भी देश में इस तरह का गायन नहीं है।

जब भी बात नवरात्रि की आती है, तो हमारे दिमाग में पूजा-पाठ, देवी माँ की अर्चना, आरती तक ही सीमित रह जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि नवरात्रि का त्योहार क्यों मनाया जाता है? इसकी मान्यता क्या है?

दशकों से हम नवरात्रि का त्योहार मनाते आ रहे हैं, व्रत रखते आ रहे हैं, देश के अलग-अलग हिस्सों में, अलग-अलग तरीकों से इस त्योहार को मनाया जाता है। कहीं कुछ लोग पूरी रात गरबा और आरती कर नवरात्रि के व्रत रखते हैं। तो

तपस्या से खुश हुए और उसे दर्शन देकर कहा कि उसे जो भी वर चाहिए, वो मांग सकता है। महिषासुर ने अपने लिए अमर होने का वरदान मांगा।

महिषासुर की ऐसी बात सुनकर ब्रह्मा जी बोले, जो इस संसार में पैदा हुआ है, उसकी मौत निश्चित है। इसलिए जीवन और मृत्यु को छोड़कर जो चाहे मांग लो। ऐसा सुनकर



एक बेहद खूबसूरत अप्सरा के रूप में देवी दुर्गा का रूप धारण कर लिया। देवी दुर्गा को देख महिषासुर उनपर मोहित हो गया और उनसे विवाह का प्रस्ताव सामने रखा। बार-बार वो यही कोशिश करता रहा।

देवी दुर्गा मान गई लेकिन एक शर्त पर... उन्होंने कहा कि महिषासुर को उनसे लड़ाई में जीतना होगा। महिषासुर मान गया। और फिर लड़ाई शुरू हो गई जो नौ दिनों तक चली। दसवें दिन देवी दुर्गा ने महिषासुर का अंत कर दिया... और तभी से ये नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है।

आज के परिदृश्य में हम देखें तो महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, दुराचार करने वाले को हम उसी श्रेणी में ही देख सकते हैं। जो विकारों के वशीभूत ऐसे भ्रष्ट, विकृत कृत्य करते हैं।

ऐसे में आदि शक्ति (शिव शक्ति) स्वरूपा दुर्गा बन इस धरा पर अवतार लेती है और ऐसे असुरों का संहार करती है।

इसी की यादगार में मानव में व्याप्त विकृतियों पर विजय पाने के रूप में नवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। और दसवें दिन को विजयादशमी के रूप में मनाते हैं।

इसीलिए नौ दिन मनाया जाता है नवरात्रि का त्योहार

कहीं कुछ लोग व्रत और उपवास रख माँ दुर्गा और उसके नौ रूपों की पूजा-अर्चना करते हैं। जैसे कि नौ दुर्गा के नौ देवियों का क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री के रूप में पूजा-अर्चना कर उससे वर मांगते हैं। ये तो हम सभी करते ही हैं लेकिन इस नवरात्रि के पीछे असल कहानी क्या है, इसको समझते हैं।

इससे जुड़ी एक पौराणिक कथा है, महिषासुर नाम का एक बड़ा ही शक्तिशाली राक्षस था। वो अमर होना चाहता था। और उसी इच्छा के चलते उसने ब्रह्मा की कठोर तपस्या की। ब्रह्मा जी उसकी

महिषासुर ने कहा कि ठीक है प्रभु, मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मेरी मृत्यु ना तो किसी देवता या असुर के हाथों हो और ना ही किसी मानव के हाथ। अगर हो तो किसी स्त्री के हाथों।

महिषासुर की ऐसी बात सुनकर ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहा और चले गए। इसके बाद तो महिषासुर तो राक्षसों का राजा बन गया। उसने देवताओं पर आक्रमण कर दिया। देवता घबरा गये। हालांकि उन्होंने एकजुट होकर महिषासुर का सामना किया जिसमें भगवान शिव और विष्णु ने भी उनका साथ दिया। लेकिन महिषासुर के हाथों सभी को पराजय का सामना करना पड़ा। और देवलोक पर

महिषासुर का राज हो गया।

महिषासुर से रक्षा करने के लिए सभी देवताओं ने विष्णु जी के साथ आदि शक्ति की आराधना की। उन सभी के शरीर से एक रोशनी निकली जिसने



लंडन। ब्रह्माकुमारीज के ग्लोबल रिट्रीट सेंटर के ग्रांड री-ओपनिंग सेलिब्रेशन में राजयोगिनी ब्र.कु. वेदांती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. बुजमोहन भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, ब्र.कु. मौरिनी बहन, ब्र.कु. अरुणा बहन, सिस्टर मानेंटा वीगास, सिस्टर मांडा, सिंगर ल्यूसिंडा सहित बड़ी संख्या में देश-विदेश से आये भाई-बहनें शामिल रहे।



मॉस्को-रशिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अंतर्गत एम्बेसी ऑफ इंडिया इन मॉस्को में जवाहरलाल नेहरू कल्चरल सेंटर, विभिन्न योगा स्टूडियो, आयुर्वेद सेंटर, इंडियन कल्चरल सेंटर (एसआईटीए) एवं ब्रह्माकुमारीज द्वारा विभिन्न आयोजनों में सहभागिता रही। इस दौरान ब्र.कु. हरीश भाई, माउण्ट आबू, इंडिया, डॉ. अलेक्सी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, जनरल डायरेक्टर ऑफ द ब्रह्माकुमारीज सेंटर फॉर स्पीरिचुअल डेवलपमेंट इन मॉस्को, एम्बेसडर ऑफ इंडिया टू रशिया पवन कपूर, डॉ. बुजेश गुप्ता, योगा टीचर, जवाहरलाल नेहरू कल्चरल सेंटर, मॉस्को, ब्र.कु. ओल्गा स्ट्रेलसोवा, जिम्नास्टिक कोच एवं राजयोगा टीचर सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



साउथ अफ्रीका। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के जोहांसबर्ग सेंटर पर आयोजित 'योगा टू लिव विद अ हाईयर कॉन्शियसनेस' कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सुष्मा दीदी, जयपुर, इंडिया शामिल हुईं एवं कॉन्सलेट जनरल ऑफ इंडिया इन जोहांसबर्ग महेश कुमार द्वारा इस कार्यक्रम को सपोर्ट किया गया। इसके साथ ही नेल्सपूट के स्पोर्ट्सफॉन्टेन रीहैबिलिटेशन सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. इंद्राणी बहन ने राजयोग सत्र कराया। केप टाउन के किर्स्टनबॉस गार्डन में इंडियन कॉन्सलेट द्वारा होस्टेड योग दिवस के कार्यक्रम में ब्र.कु. नीता बहन द्वारा सभी को राजयोग का अभ्यास कराया गया तथा वॉडर्स स्टेडियम में इंडियन कॉन्सलेट द्वारा होस्टेड और साउथ अफ्रीका के डिप्टी प्रेसिडेंट पॉल माशतीले एवं उनकी धर्मपत्नी द्वारा सपोर्टेड योग दिवस के कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रतिभा बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। इस भव्य कार्यक्रम में लगभग 8000 लोग शामिल रहे।



चिलोडा-गुज। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में राजयोग के अभ्यासी भाई-बहनों के उन बच्चों का सम्मान कार्यक्रम रखा गया जिन्होंने अपनी कक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाये। कार्यक्रम में ग्रीन वैल्यू स्कूल के लगभग 35 बच्चे शामिल रहे। इस मौके पर राजयोगिनी ब्र.कु. तारा दीदी, बीएसएफ सेंकड इन कमांड अजय भाई, स्कूल के मालिक निलेश भाई, मिस खीना बहन तथा स्कूल स्टाफ मौजूद रहे।



मॉस्को-रशिया। इंडियन कल्चरल सेंटर (एसआईटीए), मॉस्को द्वारा भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'आइलैंड ऑफ ड्रीम्स' में '8वें इंडिया डे फेस्टिवल' का भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव रशियन मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर और द गवर्नमेंट ऑफ मॉस्को के तत्वाधान में आयोजन किया गया। इस अवसर पर डिप्लोमैटिक मिशन के प्रतिनिधियों ने अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में एसआईटीए के अध्यक्ष मनोज कोटवानी ने कहा कि 'एक विश्व और एक परिवार' के लिए प्यार और करुणा उत्सव का उद्देश्य होना चाहिए। दुनिया भर में मानवता की सेवा करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्थान मनुष्य को उसका उद्देश्य प्राप्त करने में मदद कर रहा है और इसी उद्देश्य से प्रतिदिन लगभग 20 प्रकार की वस्तुओं के साथ इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है।



महेश्वर-म.प्र.। डॉक्टर्स डे के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में डॉ. मनीष वर्मा एमडी कैसर विशेषज्ञ, डॉ. पंकज वर्मा एम एस यूरोसर्जन, पेट रोग विशेषज्ञ डॉ. बी.एल. लछेटा, हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. कमल सिंह यादव, डॉ. अशोक सक्सेना, डॉ. पल्लवी पाटीदार, महिला रोग सर्जन, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. अनिता बहन, ब्र.कु. सारिका बहन सहित अन्य डॉक्टर्स व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



वरिष्ठ
राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

अपने से मिलने का समय 4 बजे, 3 बजे ही दिया हुआ है। 5 बजे के बाद वो अपने बच्चों से नहीं मिलता। भक्तों की तरफ देखने लगता है, लेकिन भक्तों से उसका मिलन होता नहीं। वे तो केवल प्रार्थना करते हैं, उसका गायन

अलौकिकता भरी जायेगी उसकी अनुभूति आपको बहुत अच्छी होगी। घर में बैठकर सुनने से ये अनुभूति 25 प्रतिशत रह जाती है। इसलिए वहाँ जाकर सुनना ये दूसरा ईश्वरीय मौज प्राप्त करने का तरीका है। क्योंकि

श्रीमत का पालन अवश्य करें...

अलौकिक जीवन ईश्वरीय मौजों की जीवन

करते हैं या पाठ करते हैं। उन्हें अल्पकालीन सुख मिल जाता है। जब तक वो कर रहे हैं मन खुश रहता है, शांति में रहता है फिर खत्म हो जाता है। हमें शिव बाबा ने स्वयं परम सद्गुरु बनकर ऐसी राह दिखा दी। हम सदा ईश्वरीय मौजों में रहें और ये मौज की जीवन उन्हें ही प्राप्त होती है, उन्हें ही अनुभव होती है जो भगवान की आज्ञाओं पर चलते हैं। कुछ आज्ञायें मैं सुना देता हूँ...

पहली श्रीमत- अमृतवेला। उससे मिलन की मौज। उसके स्वरूप पर बुद्धि स्थिर करेंगे, गहन आनंद की अनुभूति होगी। उससे बात

हमें शिव बाबा ने स्वयं परम सद्गुरु बनकर ऐसी राह दिखा दी। हम सदा ईश्वरीय मौजों में रहें और ये मौज की जीवन उन्हें ही प्राप्त होती है, उन्हें ही अनुभव होती है जो भगवान की आज्ञाओं पर चलते हैं।

इस ईश्वरीय मुरली से, इन महावाक्यों से हमें महान विचार मिलते हैं। रोज हमारे विचारों में परिवर्तन आता है। हमें डीप रियलाइजेशन होता है कि हम कहाँ गलती कर रहे हैं। कहाँ हमारा संकल्प गलत है उसको कैसे ठीक करें। हमें परमात्म प्यार की अनुभूति होती है महावाक्य सुनने में।

तीसरी, हम ध्यान दें कि हमारा मन व्यर्थ विचारों के बहाव में न बह रहा हो। हमें चिंता करने की आदत न पड़ गई हो। हमें छोटी-छोटी बातों में परेशान होने का संस्कार न पड़ गया हो। हम एक्सपेक्टेड की प्यासी निगाहों से दूसरों की ओर न निहारते रहते हों। इनसे ईश्वरीय मौज खत्म हो जायेगी। इन सबसे हम अपने को मुक्त करते चले। आप कहेंगे कैसे मुक्त करें, अपने हाथ में है क्या! ये सचमुच अपने ही हाथ में है। हम अपनी साधनाओं में प्रैक्टिस करते हैं। मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ... अपने मस्तक को देखें, मस्तक मेरा सिंहासन है। इस पर विराजमान हूँ, मैं राजा हूँ, मन-बुद्धि-संस्कारों की राजा। ये अपने को याद दिलायेगे कि तुम मन के वश नहीं हो सकती। वो तुम्हारा मालिक थोड़े ही है, तुम मन के मालिक हो। मन को अच्छे-अच्छे विचार दो तो बुरे विचार करने छोड़ देगा। बस गड़बड़ यहीं हो रही है कि मनुष्य अपने को सुन्दर विचार नहीं दे रहा है। उसको व्हाट्सएप से विचार मिल रहे हैं, उसको फेसबुक से विचार मिल रहे हैं जो भिन्न-भिन्न साधन हैं। उसको इन सबसे विचार मिल रहे हैं तो उसके अपने सुन्दर विचार वो खत्म होते जा रहे हैं। मनुष्य के मन में एक क्रिएटिव एनर्जी है इन सबको देखने, सुनने से वो क्रिएटिव एनर्जी खत्म होती जा रही है। मन निर्बल होता आया है। और जब परीक्षा आई, परीक्षा माना चैलेंज-जेस आये तो उनका सामना करने की शक्ति रही ही नहीं। इसलिए इन तीन चीजों पर बहुत ध्यान देना है।

करेंगे तो बहुत ज़्यादा आनंद और खुशी की अनुभूति होगी। उससे कई सुन्दर प्रेरणायें मिल जायेंगी सवरे-सवरे। ऐसा कह दें कि सवरे-सवरे अपने मन को, अपनी बुद्धि को आत्मा को चार्ज कर लेंगे। तो सारा दिन बहुत सुखों में बीतेगा। सफलता के साथ बीतेगा। टेंशन फ्री, स्ट्रेस फ्री बीतेगा।

दूसरी, उसके महावाक्य सुनना। आजकल बहुतों के फोन पर ही महावाक्य आते हैं, जिसको हम ज्ञान मुरली कहते हैं। लेकिन बहुत सुन्दर हो कि आप सवरे उठकर, तैयार होकर आप ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर जायें। वहाँ 50-100 के बीच ईश्वरीय महावाक्य सुनें। वहाँ के वायब्रेशन्स का सुख, सुनाने वाले की स्थिति के द्वारा जो महावाक्यों में एक

हमारी ये अलौकिक जीवन ईश्वरीय मौजों की जीवन है। लोग तो शायद सुनकर कल्पना मानेंगे या हैरान होंगे; कि हम भगवान के साथ जी रहे हैं! वो हमारी जीवन यात्रा पर हमारा साथी बन गया है। हम उसके साथ जुड़ गये। जैसे वो हमारे परिवार का हेड हो गया है और हम उसका ईश्वरीय परिवार। हम उसके प्यारे बच्चे, हम उसके अधिकारी बच्चे बन गए। वो हमें सबकुछ देने आ गया है। वो प्यार का सागर है। उसका सम्पूर्ण प्यार भी हमारे लिए है। वो ज्ञान का सागर है, उसने अपना सम्पूर्ण ज्ञान भी हमें दे दिया है। वो सुखों का सागर है। उसने हमें राह बता दी कि तुम ईश्वरीय सुखों में सदा कैसे रहो। सदा ही आनंद को कैसे अनुभव करो। मैं सर्वशक्तिवान हूँ... मेरे से शक्तियाँ कैसे लो। अगर हम ये सब करते रहते हैं तो हमारा जीवन ईश्वरीय जीवन मौज का जीवन हो जाता है। मौज माना अलौकिक आनंद।

एक दुनियावी मौज है पैसा हो गया, खा-पी रहे हैं, शराब पी रहे हैं, डांस देख रहे हैं, बहुत कुछ व्यसनों में चले गए तो लोग सोचते हैं कि हम तो बड़े मौज में रहते हैं हमारे घर में। इतने कार्य हैं, हमारा घर इतना बड़ा है। ठीक है सांसारिक दृष्टि से वो मौज है। लेकिन आजकल तो वो मौज नहीं रही है। जो ज़्यादा पी रहे हैं तो किसी की किड़नी फेल हो रही है, किसी का लिवर खत्म हो रहा है, हार्ट पर इफेक्ट आ रहा है। थोड़े दिन की मौज और सदाकाल के लिए जीवन बेकार हो जाता है। लोग उठते ही कोई फोन पर, कोई अखबारों में, देर से उठेंगे, क्योंकि भगवान ने तो हमें



शाजापुर-म.प्र. मध्य प्रदेश प्रशासन एवं जिला कलेक्टर द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के समापन समारोह कार्यक्रम एवं तिरंगा यात्रा में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया जिसमें ब्रह्माकुमारीज द्वारा अहम भूमिका निभाई गई। इस दौरान कार्यक्रम में शिक्षा राज्यमंत्री इंद्र सिंह परमार, जिला कलेक्टर किशोर कन्याल, भाजपा के जिला अध्यक्ष अशोक नायक, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष अंबाराम कराडा, अनुराधा अंबाराम कराडा, नगर पालिका अध्यक्ष प्रेम जैन, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष प्रदीप चंद्रवंशी, सिटी न्यूज के ब्यूरोचीफ मनीष सोनी, नगर पालिका के समस्त पार्षदगण एवं सभी शासकीय विभागों के अधिकारी, कर्मचारी, बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें व नगरवासी सम्मिलित रहे।



नंदुरबार-महा. ब्रह्माकुमारीज से जुड़ी 12 ब्रह्मचारिणी बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ परमात्मा शिव को समर्पित किया। इस अवसर पर आयोजित समर्पण समारोह में पूर्व विधायक चंद्रकांत रघुवंशी, पूर्व नगराध्यक्ष रत्ना रघुवंशी, पूर्व नगरसेवक मोहन भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. कमल दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. विजया दीदी, ब्र.कु. विद्या दीदी, शहादा, ब्र.कु. बाळू भाई, माउण्ट आबू, ब्र.कु. योगिता बहन, नंदुरबार, ब्र.कु. मोना बहन, शहादा सहित बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



मुम्बई-घाटकोपर। दुनिया की पहली पेशेवर महिला तबला वादक, मल्टी फ़क्शनलिस्ट और संगीतकार पंडित अनुराधा पाल द्वारा 'भारत वंदन- अनुराधा पाल कलेक्टिव' विषय पर 'फ्यूजन संगीत संस्था' का आयोजन किया गया। जिसमें तबला, सारंगी, बांसुरी, कीबोर्ड, मृदंगम, ढोलक और गीतों को एक साथ पेश किया गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किये जाने पर सम्माननीय अतिथि के रूप में राजयोगी ब्र.कु. निकुंज भाई शामिल हुए। कार्यक्रम में गजल नवाज भीमराव पांचाले, लोकप्रिय मराठी गजल गायक, दिलशाद खान, प्रशंसित सारंगी कलाकार, राजस्थानी लोक कलाकार दिने खान व लतीफ खान सहित अनेक लोकप्रिय कलाकार मौजूद रहे।



ग्वालियर-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज के दिव्यांग सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू द्वारा सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण संचालनालय मध्य प्रदेश के सहयोग से 'दिव्यांग समानता, संरक्षण और सशक्तिकरण अभियान' के ग्वालियर पहुंचने पर ब्रह्माकुमारीज प्रभु उपहार भवन माधौगंज सेवाकेन्द्र द्वारा सभी अभियान यात्रियों का स्वागत एवं अभिनंदन हुआ। तत्पश्चात् अभियान द्वारा झॉसी रोड स्थित माधव दृष्टि बाधित आश्रम (माधव अंधाश्रम) में दिव्यांग बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस दौरान भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आशीष प्रताप सिंह, ब्र.कु. दीपेंद्र भाई, भोपाल, ब्र.कु. सरिता दीदी, ब्र.कु. किन दीदी, माधव दृष्टिबाधित स्कूल के प्राचार्य रामलाल केवट, शशिकांत द्विवेदी आदि मौजूद रहे।



छतरपुर-किशोर सागर (म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में ग्रेजुएट, पोस्ट एवं बीई की छात्राओं के लिए सप्त दिवसीय कार्यक्रम 'चलो चलें परिवर्तन पथ पर' के दौरान छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, विश्वनाथ कॉलोनी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. रजनी बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनों सहित प्रतिभागी 35 छात्राएं शामिल रहीं।



तलोदा-महा. पुलिस पी.आई. राहुल पवार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अस्मिता बहन।



नवसारी-गुज. ब्रह्माकुमारीज द्वारा अधिक मास के उपलक्ष्य में 25 दिन तक विभिन्न स्थानों पर 'पुरुषोत्तम अधिक मास का आध्यात्मिक रहस्य' विषयक प्रवचन माला का आयोजन किया गया। सेवाकेन्द्र में इस कार्यक्रम श्रृंखला के समापन अवसर पर दादा मुरजमल ड्राईफ्रूट के होलसेल व्यापारी, ब्र.कु. प्रभा बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. गुलाब भाई, ब्र.कु. बाबू भाई सहित लगभग 130 भाई-बहनें सम्मिलित हुए।

ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में 'स्पीड, सेफ्टी, स्पीरिचुअलिटी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन

सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण है व्यक्ति का अस्थिर मन : महाना

इस मौके पर...

उ.प्र. विधान सभा अध्यक्ष ने कहा- मन को सकारात्मक और सशक्त बनाने का काम कर रहा ब्रह्माकुमारी संस्थान

देश के विभिन्न प्रान्तों से रोडवेज, रेलवे, ट्रैकिंग और ऑटोमोबाइल क्षेत्र के 550 से अधिक प्रतिनिधि हुए शामिल



ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। आज भारत में एक ओर तेज गति से विकास और प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर सड़क दुर्घटनायें लगातार बढ़ रही हैं। इसका एक प्रमुख कारण अस्थिर और अशान्त मन है। यह बात ब्रह्माकुमारी के ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा

ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में 'स्पीड, सेफ्टी एंड स्पीरिचुअलिटी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कही। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मन को सकारात्मक

और सशक्त बनाने का काम ब्रह्माकुमारी संस्थान बहुत लगे और देश प्रेम की भावना से कर रहा है जो सराहनीय है। ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन जन जागृति लाने के लिए उपयोगी है। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. डॉ. सुरेश शर्मा ने विभिन्न क्षेत्रों में सुरक्षा जागृति के लिए संस्थान

द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी व वीडियो प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सड़क सुरक्षा के लिये नियमों का पालन करने की शपथ दिलवाई। प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी ने सुरक्षित जीवन के लिए यातायात नियमों के पालन के साथ-

साथ राजयोग मेडिटेशन को महत्वपूर्ण बताते हुए नियमित अभ्यास करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मन को खुशहाल बनाने के लिए परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने की जरूरत है। बड़ौदा से आये रेलवे के इंस्टीट्यूट एनएआईआर के डिप्टी डीजी राकेश राजपुरोहित ने आयोजन के उद्देश्य की सराहना करते हुए संगोष्ठी की सफलता के लिए भारतीय रेलवे और अपनी संस्था की ओर से शुभकामनाएं दी। मुम्बई से आई प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. दिव्यप्रभा बहन ने तनाव और क्रोध के कारण जीवन यात्रा में व्याप्त दुःख से मुक्त होने के लिए सकारात्मक सोच को जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं के साथ वैचारिक स्तर पर रोज दुर्घटनायें होती हैं। दूषित विचारों के कारण घर परिवार में हो रही दुर्घटनाओं को कम करने के लिए आध्यात्मिकता की जरूरत है। कार्यक्रम में प्रो. ई.वी. गिरिश ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मंच संचालन ब्र.कु. संगीता बहन ने किया।

»»» स्वास्थ्य क्षेत्र में एक और उपलब्धि... नहीं जाना होगा अब कहीं और... «««

शांतिवन 'ट्रॉमा सेंटर' में 'एमआरआई' की सुविधा शुरू



शांतिवन। जिले के लोगों को एमआरआई के लिये बड़े शहरों की ओर नहीं जाना पड़ेगा। यह सुविधा आबू शहर के शांतिवन ट्रॉमा सेंटर में अब मिलेगी। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, आरोग्यम और

ब्रह्माकुमारी के सहयोग से यह सुविधा शुरू हुई। शुभाश्व की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, जालौर-सिरोही सांसद देवजी भाई पटेल, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि. के चेयरमैन श्रीकान्त माधव वैद्य, विधायक जगसी राम

कोली, टीएचडीसी इंडिया लि. के एजीएम अमरदीप सिंह, ग्लोबल हॉस्पिटल के ट्रस्टी व ब्रह्माकुमारी के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. प्रताप मिश्रा, संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय भाई ने किया। सांसद पटेल ने आह्वान करते हुए कहा कि जालौर और सांचौर में ब्रह्माकुमारी संस्था हॉस्पिटल लेकर आती है तो जमीन से

लेकर धन की व्यवस्था की जायेगी। हमारे पास धन की कमी नहीं है। मैनेजमेंट की कमी है। और ब्रह्माकुमारी का मैनेजमेंट अद्भुत है। भाजपा के जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, नगर पालिका अध्यक्ष मगनदास चारण, डॉ. सतीश गुप्ता, डॉ. आनन्द व अन्य गणमान्य लोगों सहित ट्रॉमा सेंटर के ब्र.कु. धर्मेन्द्र, समस्त स्टाफ, नर्स और कर्मचारी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. विशाल भाई और शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका बहन द्वारा किया गया।

'राजयोग' से मीडिया कर्मियों का जीवन बनेगा स्वस्थ, सुखी व संपन्न : चंद्र

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)।

ब्रह्माकुमारी द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव का समापन समारोह 'मीडिया स्नेह मिलन' कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। स्थानीय रेड क्रॉस सोसायटी के कन्वेंशन हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में मीडिया वर्ग को ब्रह्माकुमारी के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी राजयोगी ब्र.कु. सुशांत भाई ने संस्था द्वारा चलाई जा रही अखिल भारतीय समाधान परक पत्रकारिता की जानकारी देते हुए कहा कि सकारात्मक पत्रकारिता ही समाधान परक पत्रकारिता है। क्योंकि सकारात्मक मानसिकता के बिना मानवीय समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता ही सकारात्मकता का आधार है। इसलिए पत्रकारिता में आध्यात्मिकता का समावेश जरूरी है। गया स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्रों की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनीता दीदी ने कहा कि पत्रकारों को स्वस्थ और तनाव मुक्त रहना जरूरी है। क्योंकि स्वस्थ एवं

मीडिया कर्मी एक जागरूक और सतर्क प्रहरी के रूप में दिन-रात व्यस्त रहता है। जिससे उसके व्यवसायिक जीवन के साथ पारिवारिक माहौल भी अस्वस्थ व तनाव युक्त रहता है। ऐसे में पत्रकारों को अपनी रोजमर्रा के जीवन से कुछ समय निकाल कर ब्रह्माकुमारी संस्था के रूहानी ज्ञान व राजयोग ध्यान का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। जिससे उनकी आंतरिक शक्ति व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी, वे स्वस्थ, सुखी व तनाव रहित जीवन व्यतीत कर सकेंगे - **जिला जन संपर्क अधिकारी दीपक चंद्र।**

सकारात्मक मानसिकता ही पत्रकारों के लेखनी व समाचारों को स्वस्थ व सकारात्मक रूप प्रदान कर सकता है। कार्यक्रम में उपेन्द्र सिंह, अध्यक्ष, रेड क्रॉस सोसायटी, सुबोध प्रकाश, सचिव, रेड क्रॉस सोसायटी, डॉ. अभय सिंघा, नेत्र रोग विशेषज्ञ, डॉ. संजय वर्मा, समाजसेवी राज कुमार अग्रवाल आदि ने भी विचार रखे।

» 'मीडिया स्नेह मिलन' के साथ संपन्न हुआ आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष

» बच्चों द्वारा देश भक्ति पर हृदयस्पर्शी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की दी गई प्रस्तुति

गीता पाठशालाओं का वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह

पानीपत-ज्ञान मानसरोवर(हरियाणा)।

ब्रह्माकुमारी के ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में पानीपत सर्कल के ब्रह्माकुमारी गीता पाठशालाओं के वार्षिक उत्सव का आयोजन हुआ तथा इन सभी गीता पाठशालाओं को चलाने के निमित्त भाई-बहनों का सम्मान समारोह भी किया गया। इस वार्षिक उत्सव में 1500 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया।

इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, चेयरपर्सन, ब्रह्माकुमारी, ज्यूरिस्ट विंग, नई दिल्ली ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महान व्यक्ति वही है जो स्वयं भी ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करता है एवं दूसरों का भी जीवन बनाने में सहयोग देता है और वह घर मंदिर के समान है जिस घर में ईश्वरीय ज्ञान की क्लास चलती है। मुख्य अतिथि राजेश सोनी, सिटी मजिस्ट्रेट, पानीपत ने कहा कि ज्ञान की अच्छी बातें हमें जहां से भी मिले ग्रहण करनी चाहिए और फिर जीवन में उन बातों

को धारण भी जरूर करना चाहिए। जब इंसान भगवान को याद करता है तो भगवान भी उसका साथ सदा निभाता है। ज्ञान मानसरोवर निदेशक राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई ने कहा कि पानीपत सबजोन में 400 से ज्यादा ब्रह्माकुमारी

रहेंगे एवं दूसरों का भी जीवन निर्व्यसनी बनायेंगे। सर्कल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि हम दूसरों के लिए मिसाल हैं। इसलिए हमें स्वयं के ऊपर इतनी सावधानी रखनी चाहिए जो हमसे कोई कर्म ऐसा ना हो जिसका गलत प्रभाव दूसरों के



की पाठशालाएं हैं जहां आकर अनेक लोगों का जीवन परिवर्तन हुआ है। सैकड़ों परिवार निर्विकारी और निर्व्यसनी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने सभी से ये शुभ प्रतिज्ञा भी कराई कि हम सब भी निर्व्यसनी

ऊपर पड़े। इसराना ब्लॉक डीएसपी कृष्ण कुमार भी मुख्य रूप से उपस्थित रहे एवं अपनी शुभकामनाएं दी। बिजनौर सेवाकेंद्र से ब्र.कु. सुरेश बहन ने आभार किया। मंच संचालन ब्र.कु. शिवानी बहन, हुड्डा ने किया।